قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

اُتْلُ مآ اُوْحِیَ

पारा - 21

eParah

اِنَّ	الصَّلٰوةَ ؕ	وَ اَقِمِ	مِنَ الْكِتٰبِ	اِلَيْكَ	اُوْحِيَ	مَآ	اُتْلُ
बेशक	नमाज़	और क़ायम कीजिए	किताब में से	आपकी तरफ़	वही किया गया	जो	तिलावत कीजिए

اَكْبَرُ ؕ	اللّٰهِ	وَ لَذِكْرُ	وَالْمُنْكَرِ ؕ	عَنِ الْفَحْشَآءِ	تَنْهٰى	الصَّلٰوةَ
सबसे बड़ा है	अल्लाह का	और अलबत्ता ज़िक्र	और बुराई से	बेहयाई से	रोकती है	नमाज़

اِلَّا	اَهْلَ الْكِتٰبِ	تُجَادِلُوْٓا	وَلَا	تَصْنَعُوْنَ (45)	مَا	يَعْلَمُ	وَاللّٰهُ
मगर	अहले किताब से	तुम झगड़ा करो	और ना	तुम करते हो	जो कुछ	वो जानता है	और अल्लाह

وَ قُوْلُوْٓا	مِنْهُمْ	ظَلَمُوْا	الَّذِيْنَ	اِلَّا	اَحْسَنُ ۖ ق	هِيَ	بِالَّتِيْ
और कहो	उनमें से	ज़ुल्म किया	उनके जिन्होंने	सिवाए	सबसे अच्छा है	वो	उस तरीक़े से जो

وَ اِلٰهُنَا	اِلَيْكُمْ	وَ اُنْزِلَ	اِلَيْنَا	اُنْزِلَ	بِالَّذِيْٓ	اٰمَنَّا
और इलाह हमारा	तुम्हारी तरफ़	और नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	उस पर जो	ईमान लाए हम

اَنْزَلْنَآ	وَ كَذٰلِكَ	مُسْلِمُوْنَ (46)	لَهٗ	وَّنَحْنُ	وَاحِدٌ	وَ اِلٰهُكُمْ
नाज़िल की हमने	और इसी तरह	फ़रमांबरदार हैं	उसी के	और हम	एक ही है	और इलाह तुम्हारा

بِهٖ ج	يُؤْمِنُوْنَ	الْكِتٰبَ	اٰتَيْنٰهُمُ	فَالَّذِيْنَ	الْكِتٰبَ ؕ	اِلَيْكَ
उस पर	वो ईमान लाते हैं	किताब	दी हमने उन्हें	पस वो लोग जो	किताब	तरफ़ आपके

اِلَّا	بِاٰيٰتِنَآ	يَجْحَدُ	وَمَا	بِهٖ ؕ	يُّؤْمِنُ	مَنْ	وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ
मगर	हमारी आयात का	इंकार करते	और नहीं	उस पर	ईमान लाते हैं	जो	और इनमें से भी हैं

وَّلَا	مِنْ كِتٰبٍ	مِنْ قَبْلِهٖ	تَتْلُوْا	كُنْتَ	وَمَا	الْكٰفِرُوْنَ (47)
और ना	कोई किताब	इससे पहले	आप पढ़ते	थे आप	और ना	जो काफ़िर हैं

اٰيٰتٌ	هُوَ	بَلْ	الْمُبْطِلُوْنَ (48)	لَّارْتَابَ	اِذًا	بِيَمِيْنِكَ	تَخُطُّهٗ
आयात हैं	वो	बल्कि	बातिल परस्त	अलबत्ता शक में पड़ जाते	तब	अपने दाऐं हाथ से	आप लिखते थे इसे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَيِّنٰتٌ	فِيْ صُدُوْرِ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْعِلْمَ ؕ	وَمَا	يَجْحَدُ
वाज़ेह	सीनों में	उन लोगों के जो	दिए गए	इल्म	और नहीं	इंकार करते

بِاٰيٰتِنَآ	اِلَّا	الظّٰلِمُوْنَ (49)	وَقَالُوْا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْهِ	اٰيٰتٌ
हमारी आयात का	मगर	जो ज़ालिम हैं	और उन्होंने कहा	क्यों नहीं	उतारी गईं	उस पर	निशानियां

مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	قُلْ	اِنَّمَا	الْاٰيٰتُ	عِنْدَ	اللّٰهِ ؕ	وَاِنَّمَآ	اَنَا
उसके रब की तरफ़ से	कह दीजिए	बेशक	निशानियां	पास हैं	अल्लाह के	और बेशक	मैं तो

نَذِيْرٌ	مُّبِيْنٌ (50)	اَوَلَمْ	يَكْفِهِمْ	اَنَّآ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْكَ
डराने वाला हूं	खुल्लम-खुल्ला	क्या भला नहीं	काफ़ी उन्हें	बेशक हम	नाज़िल की हमने	आप पर

الْكِتٰبَ	يُتْلٰى	عَلَيْهِمْ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَرَحْمَةً	وَّذِكْرٰى	لِقَوْمٍ
किताब	जो पढ़ी जाती है	उन पर	बेशक	उसमें	अलबत्ता रहमत	और नसीहत है	उन लोगों के लिए

ع 5 7 1

يُّؤْمِنُوْنَ (51) ع	قُلْ	كَفٰى	بِاللّٰهِ	بَيْنِيْ	وَبَيْنَكُمْ	شَهِيْدًا ۚ	يَعْلَمُ
जो ईमान लाते हैं	कह दीजिए	काफ़ी है	अल्लाह	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे	गवाह	वो जानता है

مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِالْبَاطِلِ	وَكَفَرُوْا
जो कुछ	आसमानों में	और ज़मीन में है	और वो लोग जो	ईमान लाए	बातिल पर	और उन्होंने कुफ़्र किया

بِاللّٰهِ ۙ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ (52)	وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ	بِالْعَذَابِ ؕ
साथ अल्लाह के	यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	और वो जल्दी मांगते हैं आपसे	अज़ाब

وَلَوْلَآ	اَجَلٌ	مُّسَمًّى	لَّجَآءَهُمُ	الْعَذَابُ ؕ	وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ
और अगर ना होती	मुद्दत	मुक़र्रर	अलबत्ता आ जाता उनके पास	अज़ाब	और अलबत्ता वो ज़रूर आएगा उनके पास

بَغْتَةً	وَّهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ (53)	يَسْتَعْجِلُوْنَكَ	بِالْعَذَابِ ؕ	وَاِنَّ
अचानक	इस हाल में कि	वो शऊर ना रखते होंगे	वो जल्दी मांगते हैं आपसे	अज़ाब	और बेशक

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَهَنَّمَ	لَمُحِيْطَةٌۢ	بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿54﴾	يَوْمَ	يَغْشٰهُمُ	الْعَذَابُ
जहन्नम	अलबत्ता घेरने वाली है	काफ़िरों को	जिस दिन	ढांप लेगा उन्हें	अज़ाब

مِنْ فَوْقِهِمْ	وَمِنْ تَحْتِ	اَرْجُلِهِمْ	وَيَقُوْلُ	ذُوْقُوْا	مَا	كُنْتُمْ
उनके ऊपर से	और नीचे से	उनके पांव के	और वो फ़रमाएगा	चखो	जो	थे तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿55﴾	يٰعِبَادِيَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْۤا	اِنَّ	اَرْضِيْ	وَاسِعَةٌ
तुम अमल करते	ऐ मेरे बंदो	वो जो	ईमान लाए हो	बेशक	ज़मीन मेरी	वसीअ है

فَاِيَّايَ	فَاعْبُدُوْنِ ﴿56﴾	كُلُّ	نَفْسٍ	ذَآئِقَةُ	الْمَوْتِ قف	ثُمَّ
पस सिर्फ़ मेरी ही	पस तुम इबादत करो मेरी	हर	नफ़्स	चखने वाला है	मौत को	फिर

اِلَيْنَا	تُرْجَعُوْنَ ﴿57﴾	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ
तरफ़ हमारे ही	तुम सब लौटाए जाओगे	और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

لَنُبَوِّئَنَّهُمْ	مِّنَ الْجَنَّةِ	غُرَفًا	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ
अलबत्ता हम ज़रूर ठिकाना देंगे उन्हें	जन्नत के	बाला ख़ाने	बहती होंगी	उनके नीचे से	नहरें

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	نِعْمَ	اَجْرُ	الْعٰمِلِيْنَ ﴿58﴾ ۖۗ	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْا
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	कितना अच्छा है	अजर	अमल करने वालों का	वो जिन्होंने	सब्र किया

وَعَلٰى رَبِّهِمْ	يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿59﴾	وَكَاَيِّنْ	مِّنْ دَآبَّةٍ	لَّا تَحْمِلُ	رِزْقَهَا ۖۗ
और अपने रब पर ही	वो तवक्कुल करते हैं	और कितने ही	जानदार हैं	नहीं वो उठाते	रिज़्क़ अपना

اَللّٰهُ	يَرْزُقُهَا	وَاِيَّاكُمْ ۖ	وَهُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿60﴾	وَلَئِنْ
अल्लाह	वो रिज़्क़ देता है उन्हें	और तुम्हें भी	और वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	और अलबत्ता अगर

سَاَلْتَهُمْ	مَّنْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَسَخَّرَ	الشَّمْسَ
पूछें आप उनसे	किसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	और उसने मुसख़्ख़र किया	सूरज

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْقَمَرَ	لَيَقُوْلُنَّ	اللّٰهُ ۚ	فَاَنّٰى	يُؤْفَكُوْنَ (61)	اَللّٰهُ	يَبْسُطُ
और चांद को	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	अल्लाह ने	तो कहां से	वो फेरे जाते हैं	अल्लाह	वो फैला देता है

الرِّزْقَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ	وَيَقْدِرُ	لَهٗ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
रिज़्क़ को	जिसके लिए	वो चाहता है	अपने बंदों में से	और वो तंग कर देता है	उसके लिए	बेशक	अल्लाह

بِكُلِّ	شَیْءٍ	عَلِيْمٌ (62)	وَلَئِنْ	سَاَلْتَهُمْ	مَّنْ	نَّزَّلَ
हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है	और अलबत्ता अगर	पूछें आप उनसे	किसने	नाज़िल किया

مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَاَحْيَا	بِهِ	الْاَرْضَ	مِنْ بَعْدِ	مَوْتِهَا
आसमान से	पानी	फिर उसने ज़िंदा किया	साथ उसके	ज़मीन को	बाद	उसकी मौत के

لَيَقُوْلُنَّ	اللّٰهُ ؕ	قُلِ	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ ؕ	بَلْ	اَكْثَرُهُمْ
अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	अल्लाह ने	कह दीजिए	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	बल्कि	अक्सर उनके

لَا يَعْقِلُوْنَ (63) ع	وَمَا	هٰذِهِ	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَآ	اِلَّا	لَهْوٌ	وَّلَعِبٌ ؕ
नहीं वो अक़्ल रखते	और नहीं	ये	ज़िंदगी	दुनिया की	मगर	शुग़ल	और खेल

ع 6 12 2

وَاِنَّ	الدَّارَ	الْاٰخِرَةَ	لَهِیَ	الْحَيَوَانُ ۘ	لَوْ	كَانُوْا	يَعْلَمُوْنَ (64)
और बेशक	घर	आख़िरत का	अलबत्ता वो ही	ज़िंदगी है	काश	होते वो	वो इल्म रखते

وقف لازم

فَاِذَا	رَكِبُوْا	فِی الْفُلْكِ	دَعَوُا	اللّٰهَ	مُخْلِصِيْنَ	لَهُ
फिर जब	वो सवार होते हैं	कश्ती में	वो पुकारते हैं	अल्लाह को	ख़ालिस करने वाले होकर	उसके लिए

الدِّيْنَ ۚ۬	فَلَمَّا	نَجّٰهُمْ	اِلَى الْبَرِّ	اِذَا	هُمْ	يُشْرِكُوْنَ (65) ۙ
दीन को	तो जब	वो निजात देता है उन्हें	तरफ़ ख़ुश्की के	यकायक	वो	वो शिर्क करने लगते हैं

لِيَكْفُرُوْا	بِمَآ	اٰتَيْنٰهُمْ ۚۙ	وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۛ وقفة	فَسَوْفَ	يَعْلَمُوْنَ (66)
ताकि वो नाशुक्री करें	उसकी जो	दिया हमने उन्हें	और ताकि वो फ़ायदा उठा लें	पस अनक़रीब	वो जान लेंगे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَوَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّا	جَعَلْنَا	حَرَمًا	اٰمِنًا	وَّيُتَخَطَّفُ
क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक हम	बनाया हमने	हरम को	अमन वाला	और उचक लिए जाते हैं

النَّاسُ	مِنْ حَوْلِهِمْ ط	اَفَبِالْبَاطِلِ	يُؤْمِنُوْنَ	وَبِنِعْمَةِ	اللّٰهِ
लोग	उनके इर्द-गिर्द से	क्या फिर बातिल पर	वो ईमान लाते हैं	और नेअमत का	अल्लाह की

يَكْفُرُوْنَ (67)	وَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنِ	افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	اَوْ
वो इंकार करते हैं	और कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	गढ़ ले	अल्लाह पर	झूठ	या

كَذَّبَ	بِالْحَقِّ	لَمَّا	جَآءَهٗ ط	اَلَيْسَ	فِيْ جَهَنَّمَ	مَثْوًى
वो झुठलाए	हक़ को	जबकि	वो आ जाए उसके पास	क्या नहीं है	जहन्नम में	ठिकाना

لِّلْكٰفِرِيْنَ (68)	وَالَّذِيْنَ	جَاهَدُوْا	فِيْنَا	لَنَهْدِيَنَّهُمْ
काफ़िरों के लिए	और वो जिन्होंने	जद्दो जहद की	हमारी (राह) में	अलबत्ता हम ज़रूर हिदायत देंगे उन्हें

سُبُلَنَا ط	وَاِنَّ	اللّٰهَ	لَمَعَ	الْمُحْسِنِيْنَ (69) ع
अपने रास्तों की	और बेशक	अल्लाह	अलबत्ता साथ है	एहसान करने वालों के

ع 7 6 3

INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيَاتُهَا 60 — 30 سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ 84 — رُكُوْعَاتُهَا 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ (1) ج	غُلِبَتِ	الرُّوْمُ (2) لا	فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ	وَهُمْ	مِّنْ بَعْدِ
الٓمّٓ	मग़लूब हो गए	रूमी	क़रीब की ज़मीन में	और वो	बाद

غَلَبِهِمْ	سَيَغْلِبُوْنَ (3) لا	فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ط	لِلّٰهِ	الْاَمْرُ
अपने मग़लूब होने के	अनक़रीब वो ग़ालिब आ जाएंगे	चंद सालों में	अल्लाह ही के लिए है	हुक्म

مِنْ قَبْلُ	وَمِنْ بَعْدُ ط	وَيَوْمَئِذٍ	يَّفْرَحُ	الْمُؤْمِنُوْنَ (4) لا	بِنَصْرِ
इससे पहले	और इसके बाद	और उस दिन	ख़ुश हो जाएंगे	मोमिन	मदद से

اللّٰهِ ؕ	يَنْصُرُ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ⑤ ۙ	وَعْدَ
अल्लाह की	वो मदद करता है	जिसकी	वो चाहता है	और वो	बहुत ज़बरदस्त है	बहुत रहम करने वाला है	वादा है

اللّٰهِ ؕ	لَا يُخْلِفُ	اللّٰهُ	وَعْدَهٗ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ ⑥
अल्लाह का	नहीं ख़िलाफ़ करता	अल्लाह	वादा अपना	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं वो जानते

يَعْلَمُوْنَ	ظَاهِرًا	مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖۚ	وَهُمْ	عَنِ الْاٰخِرَةِ	هُمْ
वो जानते हैं	ज़ाहिर को	दुनिया की ज़िंदगी के	और वो	आख़िरत से	वो

غٰفِلُوْنَ ⑦	اَوَلَمْ	يَتَفَكَّرُوْا	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قف	مَا	خَلَقَ	اللّٰهُ
ग़ाफ़िल हैं	क्या भला नहीं	उन्होंने ग़ौरो फ़िक्र किया	अपने नफ़्सों में	नहीं	पैदा किया	अल्लाह ने

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَمَا	بَيْنَهُمَآ	اِلَّا	بِالْحَقِّ	وَاَجَلٍ
आसमानों	और ज़मीन को	और जो कुछ	दर्मियान है उन दोनों के	मगर	साथ हक़ के	और वक़्त

مُّسَمًّى ؕ	وَاِنَّ	كَثِيْرًا	مِّنَ النَّاسِ	بِلِقَآئِ	رَبِّهِمْ	لَكٰفِرُوْنَ ⑧
मुक़र्रर के	और बेशक	बहुत से	लोगों में से	मुलाक़ात का	अपने रब की	अलबत्ता इंकार करने वाले हैं

اَوَلَمْ	يَسِيْرُوْا	فِي الْاَرْضِ	فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ
क्या भला नहीं	वो चले फिरे	ज़मीन में	तो वो देखते	कैसा	हुआ	अंजाम

الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَانُوْٓا	اَشَدَّ	مِنْهُمْ	قُوَّةً	وَّاَثَارُوا
उनका जो	उनसे पहले थे	थे वो	ज़्यादा शदीद	उनसे	क़ुव्वत में	और उन्होंने उधेड़ा था

الْاَرْضَ	وَعَمَرُوْهَآ	اَكْثَرَ	مِمَّا	عَمَرُوْهَا	وَجَآءَتْهُمْ
ज़मीन को	और उन्होंने आबाद किया था उसे	ज़्यादा	उससे जो	इन्होंने आबाद किया है उसे	और आए उनके पास

رُسُلُهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ ؕ	فَمَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيَظْلِمَهُمْ	وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا
रसूल उनके	साथ वाज़ेह दलाइल के	तो ना	था	अल्लाह	कि वो ज़ुल्म करता उन पर	और लेकिन	थे वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْفُسَهُمْ	يَظْلِمُوْنَ ط (9)	ثُمَّ	كَانَ	عَاقِبَةَ	الَّذِيْنَ	اَسَآءُوا
अपनी जानों पर	वो ज़ुल्म करते	फिर	हुआ	अंजाम	उनका जिन्होंने	बुराई की

السُّوْٓاٰى	اَنْ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	وَكَانُوْا	بِهَا	يَسْتَهْزِءُوْنَ (10) ع
बहुत बुरा	कि	उन्होंने झुठलाया	अल्लाह की आयात को	और थे वो	उनका	वो मज़ाक़ उड़ाते

ع 1 10 4

اَللّٰهُ	يَبْدَؤُا	الْخَلْقَ	ثُمَّ	يُعِيْدُهٗ	ثُمَّ	اِلَيْهِ	تُرْجَعُوْنَ (11)
अल्लाह	वो इब्तिदा करता है	तख़लीक़ की	फिर	वो एआदा करेगा उसका	फिर	तरफ़ उसी के	तुम लौटाए जाओगे

وَيَوْمَ	تَقُوْمُ	السَّاعَةُ	يُبْلِسُ	الْمُجْرِمُوْنَ (12)	وَلَمْ	يَكُنْ
और जिस दिन	क़ायम होगी	क़यामत	नाउम्मीद हो जाएंगे	मुजरिम	और ना	होंगे

لَّهُمْ	مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ	شُفَعٰٓؤُا	وَكَانُوْا	بِشُرَكَآئِهِمْ	كٰفِرِيْنَ (13)
उनके लिए	उनके शरीकों में से	कोई सिफ़ारिशी	और वो हो जाएंगे	अपने शरीकों का	इंकार करने वाले

وَيَوْمَ	تَقُوْمُ	السَّاعَةُ	يَوْمَئِذٍ	يَّتَفَرَّقُوْنَ (14)	فَاَمَّا	الَّذِيْنَ
और जिस दिन	क़ायम होगी	क़यामत	उस दिन	वो मुताफ़र्रिक़ हो जाएंगे	तो रहे	वो लोग जो

اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	فَهُمْ	فِىْ رَوْضَةٍ	يُّحْبَرُوْنَ (15)	وَاَمَّا
ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	तो वो	एक बाग़ में	वो ख़ुश कर दिए जाएंगे	और रहे

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَكَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	وَلِقَآئِ	الْاٰخِرَةِ	فَاُولٰٓئِكَ
वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	और झुठलाया	हमारी आयात को	और मुलाक़ात को	आख़िरत की	तो यही लोग

فِى الْعَذَابِ	مُحْضَرُوْنَ (16)	فَسُبْحٰنَ	اللّٰهِ	حِيْنَ	تُمْسُوْنَ	وَحِيْنَ
अज़ाब में	हाज़िर रखे जाने वाले हैं	पस तस्बीह है	अल्लाह की	जब	तुम शाम करते हो	और जब

تُصْبِحُوْنَ (17)	وَلَهُ	الْحَمْدُ	فِى السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَعَشِيًّا
तुम सुबह करते हो	और उसी के लिए है	सब तारीफ़	आसमानों में	और ज़मीन में	और तीसरे पहर

AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

الْمَيِّتَ	وَيُخْرِجُ	مِنَ الْمَيِّتِ	الْحَيَّ	يُخْرِجُ	تُظْهِرُوْنَ (18)	وَّحِيْنَ
मुर्दा को	और वो निकालता है	मुर्दा से	ज़िंदा को	वो निकालता है	तुम ज़ोहर करते हो	और जिस वक़्त

وَكَذٰلِكَ	مَوْتِهَا ؕ	بَعْدَ	الْاَرْضَ	وَيُحْيِ	مِنَ الْحَيِّ
और इसी तरह	उसकी मौत के	बाद	ज़मीन को	और वो ज़िंदा करता है	ज़िंदा से

ع 2 9 5

ثُمَّ	مِّنْ تُرَابٍ	خَلَقَكُمْ	اَنْ	وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ	تُخْرَجُوْنَ (19) ع
फिर	मिट्टी से	उसने पैदा किया तुम्हें	कि	और उसकी निशानियों में से है	तुम निकाले जाओगे

خَلَقَ	اَنْ	وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ	تَنْتَشِرُوْنَ (20)	بَشَرٌ	اَنْتُمْ	اِذَآ
उसने पैदा किए	कि	और उसकी निशानियों में से है	तुम फैलते चले जा रहे हो	इंसान हो	तुम	यकायक

بَيْنَكُمْ	وَجَعَلَ	اِلَيْهَا	لِّتَسْكُنُوْٓا	اَزْوَاجًا	مِّنْ اَنْفُسِكُمْ	لَكُمْ
दर्मियान तुम्हारे	और उसने डाल दी	उनकी तरफ़	ताकि तुम सुकून पाओ	जोड़े	तुम्हारे नफ़्सों से	तुम्हारे लिए

يَّتَفَكَّرُوْنَ (21)	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	وَّرَحْمَةً ؕ	مَّوَدَّةً
जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें	बेशक	और रहमत	मोहब्बत

اَلْسِنَتِكُمْ	وَاخْتِلَافُ	وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	خَلْقُ	وَمِنْ اٰيٰتِهٖ
तुम्हारी ज़बानों का	और इख़्तिलाफ़	और ज़मीन की	आसमानों	पैदाइश	और उसकी निशानियों में से है

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ	لِّلْعٰلِمِيْنَ (22)	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	وَاَلْوَانِكُمْ ؕ
और उसकी निशानियों में से है	इल्म वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें	बेशक	और तुम्हारे रंगों का

فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ	وَابْتِغَآؤُكُمْ	وَالنَّهَارِ	بِالَّيْلِ	مَنَامُكُمْ
इसमें	यक़ीनन	उसके फ़ज़्ल से	और तलाश करना तुम्हारा	और दिन को	रात	सोना तुम्हारा

الْبَرْقَ	يُرِيْكُمُ	وَمِنْ اٰيٰتِهٖ	يَّسْمَعُوْنَ (23)	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ
बिजली	कि वो दिखाता है तुम्हें	और उसकी निशानियों में से है	जो सुनते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

خَوۡفًا	وَّ طَمَعًا	وَّ يُنَزِّلُ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَيُحۡيٖ	بِهٖ
ख़ौफ़	और उम्मीद से	और वो उतारता है	आसमान से	पानी	फिर वो ज़िंदा करता है	साथ उसके

الۡاَرۡضَ	بَعۡدَ	مَوۡتِهَا ؕ	اِنَّ	فِيۡ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوۡمٍ
ज़मीन को	बाद	उसकी मौत के	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए

يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿24﴾	وَ مِنۡ اٰيٰتِهٖۤ	اَنۡ	تَقُوۡمَ	السَّمَآءُ	وَالۡاَرۡضُ	بِاَمۡرِهٖ ؕ
जो अक़्ल रखते हैं	और उसकी निशानियों में से है	कि	क़ायम हैं	आसमान	और ज़मीन से	उसके हुक्म से

ثُمَّ	اِذَا	دَعَاكُمۡ	دَعۡوَةً ۖ	مِّنَ الۡاَرۡضِ ۖ	اِذَاۤ	اَنۡتُمۡ
फिर	जब	वो पुकारेगा तुम्हें	एक ही बार पुकारना	ज़मीन में	यकायक	तुम

تَخۡرُجُوۡنَ ﴿25﴾	وَلَهٗ	مَنۡ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالۡاَرۡضِ ؕ	كُلٌّ	لَّهٗ
तुम निकल आओगे	और उसी के लिए है	जो कोई	आसमानों में	और ज़मीन में है	सब	उसी के लिए

قٰنِتُوۡنَ ﴿26﴾	وَهُوَ	الَّذِيۡ	يَبۡدَؤُا	الۡخَلۡقَ	ثُمَّ	يُعِيۡدُهٗ	وَهُوَ
फ़रमांबरदार हैं	और वो ही है	जो	इब्तिदा करता है	तख़लीक़ की	फिर	वो एआदा करेगा उसका	और वो

اَهۡوَنُ	عَلَيۡهِ ؕ	وَلَهُ	الۡمَثَلُ	الۡاَعۡلٰى	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالۡاَرۡضِ ۚ
ज़्यादा आसान है	उस पर	और उसी के लिए है	मिसाल	आला	आसमानों में	और ज़मीन में

ع 3 8 6

وَهُوَ	الۡعَزِيۡزُ	الۡحَكِيۡمُ ﴿27﴾ ع	ضَرَبَ	لَكُمۡ	مَّثَلًا	مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ ؕ
और वो	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	उसने बयान की	तुम्हारे लिए	एक मिसाल	तुम्हारे नफ़्सों में से

هَلۡ	لَّكُمۡ	مِّنۡ مَّا	مَلَكَتۡ	اَيۡمَانُكُمۡ	مِّنۡ شُرَكَآءَ	فِيۡ مَا
क्या हैं	तुम्हारे लिए	उसमें से जो	मालिक हैं	दाऐं हाथ तुम्हारे	कुछ शरीक	उसमें जो

رَزَقۡنٰكُمۡ	فَاَنۡتُمۡ	فِيۡهِ	سَوَآءٌ	تَخَافُوۡنَهُمۡ	كَخِيۡفَتِكُمۡ	اَنۡفُسَكُمۡ ؕ
रिज़्क़ दिया हमने तुम्हें	तो तुम	उसमें	बराबर हो	तुम डरते हो उनसे	जैसे डरना तुम्हारा	अपने नफ़्सों (जैसों) से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَذٰلِكَ	نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّعْقِلُوْنَ (28)	بَلِ	اتَّبَعَ
इसी तरह	हम खोलकर बयान करते हैं	आयात	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल रखते हैं	बल्कि	पैरवी की

الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْٓا	اَهْوَآءَهُمْ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ج	فَمَنْ	يَّهْدِيْ
उन लोगों ने जिन्होंने	ज़ुल्म किया	अपनी ख़्वाहिशात की	बग़ैर	इल्म के	तो कौन	हिदायत दे सकता है

مَنْ	اَضَلَّ	اللّٰهُ ط	وَمَا	لَهُمْ	مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (29)	فَاَقِمْ	وَجْهَكَ
उसको जिसे	गुमराह कर दे	अल्लाह	और नहीं	उनके लिए	मददगारों में से कोई	पस क़ायम रखिए	अपने चेहरे को

لِلدِّيْنِ	حَنِيْفًا ط	فِطْرَتَ	اللّٰهِ	الَّتِيْ	فَطَرَ	النَّاسَ	عَلَيْهَا ط
दीन के लिए	यकसू हो कर	फ़ितरत	अल्लाह की	वो जो	उसने पैदा किया	लोगों को	उस पर

لَا تَبْدِيْلَ	لِخَلْقِ	اللّٰهِ ط	ذٰلِكَ	الدِّيْنُ	الْقَيِّمُ ق	وَلٰكِنَّ
नहीं (जाइज़) कोई तब्दीली	ख़ल्क़ के लिए	अल्लाह की	यही है	दीन	दुरुस्त	और लेकिन

اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ ق (30)	مُنِيْبِيْنَ	اِلَيْهِ	وَاتَّقُوْهُ	وَاَقِيْمُوا
अक्सर	लोग	नहीं वो इल्म रखते	रुजूअ करने वाले (बनो)	तरफ़ उसके	और डरो उससे	और क़ायम करो

الصَّلٰوةَ	وَلَا	تَكُوْنُوْا	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ لا (31)	مِنَ الَّذِيْنَ	فَرَّقُوْا
नमाज़	और ना	तुम हो जाओ	मुशरिकों में से	उन लोगों में से जिन्होंने	फ़िरका-फ़िरक़ा कर दिया

دِيْنَهُمْ	وَكَانُوْا	شِيَعًا ط	كُلُّ	حِزْبٍ	بِمَا	لَدَيْهِمْ	فَرِحُوْنَ (32)
अपने दीन को	और हो गए वो	गिरोह-गिरोह	हर	गिरोह (के लोग)	उस पर जो	उनके पास है	खुश हैं

وَاِذَا	مَسَّ	النَّاسَ	ضُرٌّ	دَعَوْا	رَبَّهُمْ	مُّنِيْبِيْنَ	اِلَيْهِ
और जब	पहुंचती है	लोगों को	कोई तकलीफ़	वो पुकारते हैं	अपने रब को	रुजूअ करने वाले बन कर	तरफ़ उसके

ثُمَّ	اِذَآ	اَذَاقَهُمْ	مِّنْهُ	رَحْمَةً	اِذَا	فَرِيْقٌ	مِّنْهُمْ
फिर	जब	वो चखाता है उन्हें	अपनी तरफ़ से	रहमत	यकायक	एक गिरोह (के लोग)	उनमें से

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَتَمَتَّعُوْا وقفة	اٰتَيْنٰهُمْ ط	بِمَآ	لِيَكْفُرُوْا	يُشْرِكُوْنَ ﴿33﴾ لا	بِرَبِّهِمْ
तो फ़ायदे उठा लो	अता किया हमने उन्हें	उसकी जो	ताकि वो नाशुक्री करें	वो शरीक ठहराते हैं	अपने रब के साथ

يَتَكَلَّمُ	فَهُوَ	سُلْطٰنًا	عَلَيْهِمْ	اَنْزَلْنَا	اَمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿34﴾	فَسَوْفَ
वो बताती है	तो वो	कोई दलील	उन पर	उतारी हमने	या	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब

رَحْمَةً	النَّاسَ	اَذَقْنَا	وَاِذَآ	يُشْرِكُوْنَ ﴿35﴾	بِهٖ	كَانُوْا	بِمَا
कोई रहमत	लोगों को	चखाते हैं हम	और जब	वो शरीक ठहराते	साथ जिसके	हैं वो	उनको वो जो

قَدَّمَتْ	بِمَا	سَيِّئَةٌۢ	تُصِبْهُمْ	وَاِنْ	بِهَا ط	فَرِحُوْا
आगे भेजा	बवजह उसके जो	कोई बुराई	पहुंचती है उन्हें	और अगर	उस पर	वो ख़ुश होते हैं

اللّٰهَ	اَنَّ	يَرَوْا	اَوَلَمْ	يَقْنَطُوْنَ ﴿36﴾	هُمْ	اِذَا	اَيْدِيْهِمْ
अल्लाह	बेशक	उन्होंने देखा	क्या भला नहीं	वो मायूस हो जाते हैं	वो	यकायक	उनके हाथों ने

فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	وَيَقْدِرُ ط	يَّشَآءُ	لِمَنْ	الرِّزْقَ	يَبْسُطُ
इसमें	बेशक	और वो तंग करता है	वो चाहता है	जिसके लिए	रिज़्क़	वो फैलाता है

وَالْمِسْكِيْنَ	حَقَّهٗ	ذَا الْقُرْبٰى	فَاٰتِ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿37﴾	لِّقَوْمٍ	لَاٰيٰتٍ
और मिस्कीन	हक़ उसका	क़राबतदार को	पस आप दीजिए	जो ईमान लाते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं

اللّٰهِ ز	وَجْهَ	يُرِيْدُوْنَ	لِّلَّذِيْنَ	خَيْرٌ	ذٰلِكَ	وَابْنَ السَّبِيْلِ ط
अल्लाह का	चेहरा	चाहते हैं	उनके लिए जो	बेहतर है	ये	और मुसाफ़िर को

لِّيَرْبُوَاۡ	مِّنْ رِّبًا	اٰتَيْتُمْ	وَمَآ	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿38﴾	هُمُ	وَاُولٰٓئِكَ
ताकि वो बढ़ जाए	सूद में से	देते हो तुम	और जो कुछ	जो फ़लाह पाने वाले हैं	वो	और यही लोग हैं

اٰتَيْتُمْ	وَمَآ	عِنْدَ اللّٰهِ ج	يَرْبُوْا	فَلَا	النَّاسِ	فِيْٓ اَمْوَالِ
देते हो तुम	और जो कुछ	अल्लाह के यहां	वो बढ़ता	पस नहीं	लोगों के	मालों में

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ زَكٰوةٍ	تُرِيْدُوْنَ	وَجْهَ	اللّٰهِ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُضْعِفُوْنَ ﴿39﴾
ज़कात में से	तुम चाहते हो	चेहरा	अल्लाह का	तो यही लोग हैं	वो	जो दोगुना करने वाले हैं

اَللّٰهُ	الَّذِىْ	خَلَقَكُمْ	ثُمَّ	رَزَقَكُمْ	ثُمَّ	يُمِيْتُكُمْ	ثُمَّ
अल्लाह	वो है जिसने	पैदा किया तुम्हें	फिर	उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें	फिर	वो मौत देगा तुम्हें	फिर

يُحْيِيْكُمْ ط	هَلْ	مِنْ شُرَكَآئِكُمْ	مَّنْ	يَّفْعَلُ	مِنْ ذٰلِكُمْ
वो ज़िंदा करेगा तुम्हें	क्या है	तुम्हारे शरीकों में से कोई	जो	करे	इसमें से

مِّنْ شَىْءٍ ط	سُبْحٰنَهٗ	وَتَعٰلٰى	عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ﴿40﴾ ع	ظَهَرَ	الْفَسَادُ
कोई चीज़	पाक है वो	और वो बुलंदतर है	उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	ज़ाहिर हो गया	फ़साद

ع 4 13 7

فِى الْبَرِّ	وَالْبَحْرِ	بِمَا	كَسَبَتْ	اَيْدِى	النَّاسِ	لِيُذِيْقَهُمْ
ख़ुश्की में	और समुन्दर में	बवजह उसके जो	कमाई की	हाथों ने	लोगों के	ताकि वो चखाए उन्हें

بَعْضَ	الَّذِىْ	عَمِلُوْا	لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿41﴾	قُلْ	سِيْرُوْا
बाज़ उसका	वो जो	उन्होंने अमल किए	ताकि वो	वो लौट आएँ	कह दीजिए	चलो फिरो

فِى الْاَرْضِ	فَانْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلُ ط
ज़मीन में	फिर देखो	कैसा	हुआ	अंजाम	उनका जो	(इनसे) पहले थे

كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّشْرِكِيْنَ ﴿42﴾	فَاَقِمْ	وَجْهَكَ	لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ
थे	अक्सर उनके	मुशरिक	तो क़ायम रखिए	चेहरा अपना	दुरुस्त दीन के लिए

مِنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِىَ	يَوْمٌ	لَّا مَرَدَّ	لَهٗ	مِنَ اللّٰهِ
इससे पहले	कि	आ जाए	वो दिन	नहीं कोई टलना	उसके लिए	अल्लाह की तरफ़ से

يَوْمَئِذٍ	يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿43﴾	مَنْ	كَفَرَ	فَعَلَيْهِ	كُفْرُهٗ ج	وَمَنْ	عَمِلَ
उस दिन	वो जुदा-जुदा हो जाएँगे	जिसने	कुफ़्र किया	तो उसी पर है	कुफ़्र उसका	और जिसने	अमल किया

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

صَالِحًا	فَلِاَنْفُسِهِمْ	يَمْهَدُوْنَ ﴿44﴾ۙ	لِيَجْزِيَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
नेक	तो अपने ही नफ़्सों के लिए	वो राह हमवार कर रहे हैं	ताकि वो बदला दे	उनको जो	ईमान लाए

وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	مِنْ فَضْلِهٖ ط	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿45﴾
और उन्होंने अमल किए	नेक	अपने फ़ज़्ल से	बेशक वो	नहीं वो पसंद करता	काफ़िरों को

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ	اَنْ	يُّرْسِلَ	الرِّيَاحَ	مُبَشِّرٰتٍ	وَّلِيُذِيْقَكُمْ
और उसकी निशानियों में से है	कि	वो भेजता है	हवाएं	ख़ुशख़बरी देने वालियां	और ताकि वो चखाए तुम्हें

مِّنْ رَّحْمَتِهٖ	وَلِتَجْرِيَ	الْفُلْكُ	بِاَمْرِهٖ	وَلِتَبْتَغُوْا	مِنْ فَضْلِهٖ
अपनी रहमत से	और ताकि चलें	कश्तियां	उसके हुक्म से	और ताकि तुम तलाश करो	उसके फ़ज़्ल में से

وَلَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ﴿46﴾	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	رُسُلًا
और ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	आपसे पहले	कई रसूलों को

اِلٰى قَوْمِهِمْ	فَجَآءُوْهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ	فَانْتَقَمْنَا	مِنَ الَّذِيْنَ	اَجْرَمُوْا ط
तरफ़ उनकी क़ौम के	तो वो लाए उनके पास	वाज़ेह निशानियां	तो इंतिक़ाम लिया हमने	उनसे जिन्होंने	जुर्म किया

وَكَانَ	حَقًّا	عَلَيْنَا	نَصْرُ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿47﴾	اَللّٰهُ	الَّذِيْ	يُرْسِلُ
और है	हक़	हम पर	मदद करना	मोमिनों की	अल्लाह	वो है जो	भेजता है

الرِّيٰحَ	فَتُثِيْرُ	سَحَابًا	فَيَبْسُطُهٗ	فِي السَّمَآءِ	كَيْفَ	يَشَآءُ
हवाओं को	तो वो उठाती हैं	बादल	फिर वो फैला देता है उसे	आसमान में	जिस तरह	वो चाहता है

وَيَجْعَلُهٗ	كِسَفًا	فَتَرَى	الْوَدْقَ	يَخْرُجُ	مِنْ خِلٰلِهٖ ج	فَاِذَآ
और वो कर देता है उसे	टुकड़ियों में	तो आप देखते हैं	बारिश को	वो निकलती है	उसके अंदर से	फिर जब

اَصَابَ	بِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖٓ	اِذَا	هُمْ	يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿48﴾ ج
वो पहुंचाता है	उसे	जिसे	वो चाहता है	अपने बंदों में से	यकायक	वो	वो ख़ुश हो जाते हैं

AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ قَبْلِهٖ	عَلَيْهِمْ	يُّنَزَّلَ	اَنْ	مِنْ قَبْلِ	كَانُوْا	وَاِنْ
इससे पहले ही	उन पर	वो बरसाई जाए	कि	इससे पहले	थे वो	और बेशक

يُحْيِ	كَيْفَ	رَحْمَتِ اللّٰهِ	اِلٰٓى اٰثٰرِ	فَانْظُرْ	لَمُبْلِسِيْنَ ﴿49﴾
वो ज़िंदा करता है	किस तरह	अल्लाह की रहमत के	तरफ़ आसार के	तो देखो	यक़ीनन मायूस होने वाले

وَهُوَ	الْمَوْتٰى ج	لَمُحْيِ	ذٰلِكَ	اِنَّ	مَوْتِهَا ط	بَعْدَ	الْاَرْضَ
और वो	मुर्दों को	अलबत्ता ज़िंदा करने वाला है	वो ही	बेशक	उसकी मौत के	बाद	ज़मीन को

فَرَاَوْهُ	رِيْحًا	اَرْسَلْنَا	وَلَئِنْ	قَدِيْرٌ ﴿50﴾	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى
फिर वो देखें उस (खेती) को	हवा को	भेजें हम	और अलबत्ता अगर	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर

الْمَوْتٰى	لَا تُسْمِعُ	فَاِنَّكَ	يَكْفُرُوْنَ ﴿51﴾	مِنْ بَعْدِهٖ	لَّظَلُّوْا	مُصْفَرًّا
मुर्दों को	नहीं आप सुना सकते	पस बेशक आप	वो नाशुक्री करने	बाद इसके	अलबत्ता लगें वो	ज़र्द पड़ी हुई

وَمَآ	مُدْبِرِيْنَ ﴿52﴾	وَلَّوْا	اِذَا	الدُّعَآءَ	الصُّمَّ	تُسْمِعُ	وَلَا
और नहीं	पीठ फेरते हुए	वो मुंह मोड़ जाऐं	जब	पुकार	बहरों को	आप सुना सकते	और ना

مَنْ	اِلَّا	تُسْمِعُ	اِنْ	عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ط	الْعُمْيِ	بِهٰدِ	اَنْتَ
उसे जो	मगर	आप सुना सकते	नहीं	उनकी गुमराही से	अंधों को	हिदायत देने वाले	आप

خَلَقَكُمْ	الَّذِيْ	اَللّٰهُ	مُّسْلِمُوْنَ ﴿53﴾ ع	فَهُمْ	بِاٰيٰتِنَا	يُّؤْمِنُ
पैदा किया तुम्हें	वो है जिसने	अल्लाह	फ़रमांबरदार हों	फिर वो	हमारी आयात पर	ईमान रखता हो

جَعَلَ	ثُمَّ	قُوَّةً	ضُعْفٍ	مِنْ بَعْدِ	جَعَلَ	ثُمَّ	مِّنْ ضُعْفٍ
उसने बनाई	फिर	क़ुव्वत	कमज़ोरी के	बाद	उसने बनाई	फिर	कमज़ोरी से

وَهُوَ	يَشَآءُ ج	مَا	يَخْلُقُ	وَّشَيْبَةً ط	ضُعْفًا	قُوَّةٍ	مِنْ بَعْدِ
और वो ही है	वो चाहता है	जो	वो पैदा करता है	और बुढ़ापा	कमज़ोरी	क़ुव्वत के	बाद

ع 13 5/8

قرء حفص بضم الضاد وفتحها في الثلاثة لكن الضم مختار 12

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْعَلِيْمُ	الْقَدِيْرُ ﴿54﴾	وَيَوْمَ	تَقُوْمُ	السَّاعَةُ	يُقْسِمُ
ख़ूब जानने वाला	बहुत क़ुदरत रखने वाला	और जिस दिन	क़ायम होगी	क़यामत	क़समें खाएँगे

الْمُجْرِمُوْنَ ۙ	مَا	لَبِثُوْا	غَيْرَ	سَاعَةٍ ؕ	كَذٰلِكَ	كَانُوْا
मुजरिम	नहीं	वो ठहरे	सिवाए	एक घड़ी के	इसी तरह	थे वो

يُؤْفَكُوْنَ ﴿55﴾	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْعِلْمَ	وَالْاِيْمَانَ	لَقَدْ
वो फेरे जाते	और कहेंगे	वो लोग जो	दिए गए	इल्म	और ईमान	अलबत्ता तहक़ीक़

لَبِثْتُمْ	فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ	اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۫	فَهٰذَا	يَوْمُ	الْبَعْثِ
ठहरे रहे तुम	अल्लाह की किताब में	दोबारा उठने के दिन तक	तो ये है	दिन	दोबारा उठने का

وَلٰكِنَّكُمْ	كُنْتُمْ	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿56﴾	فَيَوْمَئِذٍ	لَّا يَنْفَعُ	الَّذِيْنَ
और लेकिन तुम	थे तुम	ना तुम जानते	तो उस दिन	ना नफ़ा देगी	उनको जिन्होंने

ظَلَمُوْا	مَعْذِرَتُهُمْ	وَلَا	هُمْ	يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿57﴾	وَلَقَدْ	ضَرَبْنَا
ज़ुल्म किया	मअज़रत उनकी	और ना	वो	वो तौबा तलब किए जाएँगे	और अलबत्ता तहक़ीक़	बयान की हमने

لِلنَّاسِ	فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ	مِنْ كُلِّ	مَثَلٍ ؕ	وَلَئِنْ	جِئْتَهُمْ
लोगों के लिए	इस क़ुरआन में	हर तरह की	मिसाल	और अलबत्ता अगर	लाएँ आप उनके पास

بِاٰيَةٍ	لَّيَقُوْلَنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِنْ	اَنْتُمْ	اِلَّا	مُبْطِلُوْنَ ﴿58﴾
कोई निशानी	अलबत्ता ज़रूर कहेंगे	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	नहीं	हो तुम	मगर	बातिल परस्त

كَذٰلِكَ	يَطْبَعُ	اللّٰهُ	عَلٰى قُلُوْبِ	الَّذِيْنَ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿59﴾	فَاصْبِرْ
इसी तरह	मोहर लगा देता है	अल्लाह	दिलों पर	उन लोगों के जो	नहीं वो इल्म रखते	पस सब्र कीजिए

اِنَّ	وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقٌّ	وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ	الَّذِيْنَ	لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿60﴾ ع
बेशक	वादा	अल्लाह का	सच्चा है	और हरगिज़ ना हल्का पाएँ आपको	वो लोग जो	नहीं वो यक़ीन रखते

ع 6 7 9

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُكُوْعَاتُهَا: 4 — 31 سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ 57 — اٰيَاتُهَا: 34

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَّرَحْمَةً	هُدًى	الْحَكِيْمِ ② لا	الْكِتٰبِ	اٰيٰتُ	تِلْكَ	الٓمّٓ ① ج
और रहमत है	हिदायत	हिक्मत वाली की	किताब	आयात हैं	ये	الٓمّٓ

وَهُمْ	الزَّكٰوةَ	وَيُؤْتُوْنَ	الصَّلٰوةَ	يُقِيْمُوْنَ	الَّذِيْنَ	لِّلْمُحْسِنِيْنَ ③ لا
और वो	ज़कात	और वो अदा करते हैं	नमाज़	क़ायम करते हैं	वो जो	मोहसिनीन/नेकोकारों के लिए

وَاُولٰٓئِكَ	مِّنْ رَّبِّهِمْ	عَلٰى هُدًى	اُولٰٓئِكَ	يُوْقِنُوْنَ ④ ط	هُمْ	بِالْاٰخِرَةِ
और यही लोग हैं	अपने रब की तरफ़ से	हिदायत पर	यही लोग हैं	वो यक़ीन रखते हैं	वो	आख़िरत पर

الْحَدِيْثِ	لَهْوَ	يَّشْتَرِيْ	مَنْ	وَمِنَ النَّاسِ	الْمُفْلِحُوْنَ ⑤	هُمُ
बात	खेल तमाशा (वाली)	ख़रीदता है	जो	और लोगों में से कोई है	जो फ़लाह पाने वाले हैं	वो

هُزُوًا ط	وَّيَتَّخِذَهَا	عِلْمٍ ق صلے	بِغَيْرِ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	لِيُضِلَّ
मज़ाक़	और वो बनाता है उसे	इल्म के	बग़ैर	अल्लाह के रास्ते से	ताकि वो भटका दे

اٰيٰتُنَا	عَلَيْهِ	تُتْلٰى	وَاِذَا	مُّهِيْنٌ ⑥	عَذَابٌ	لَهُمْ	اُولٰٓئِكَ
आयात हमारी	उस पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	ज़लील करने वाला	अज़ाब है	उनके लिए	यही लोग हैं

فِيْٓ اُذُنَيْهِ	كَاَنَّ	يَسْمَعْهَا	لَّمْ	كَاَنْ	مُسْتَكْبِرًا	وَلّٰى
उसके दोनों कानों में	गोया कि	उसने सुना उन्हें	नहीं	गोया कि	तकब्बुर करते हुए	वो मुंह मोड़ लेता है

اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ	اَلِيْمٍ ⑦	بِعَذَابٍ	فَبَشِّرْهُ	وَقْرًا ج
ईमान लाए	वो जो	बेशक	दर्दनाक की	अज़ाब	तो ख़ुशख़बरी दे दीजिए उसे	कोई बोझ है

فِيْهَا ط	خٰلِدِيْنَ	النَّعِيْمِ ⑧ لا	جَنّٰتُ	لَهُمْ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا
उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नेअमतों वाले	बाग़ात हैं	उनके लिए	नेक	और उन्होंने अमल किए

AL HUDA INT RNATIONL WELFARE FOUNDATION

وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقًّا ؕ	وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ⑨	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ
वादा है	अल्लाह का	सच्चा	और वो	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	उसने पैदा किया	आसमानों को

بِغَيْرِ	عَمَدٍ	تَرَوْنَهَا	وَاَلْقٰى	فِي الْاَرْضِ	رَوَاسِيَ	اَنْ
बग़ैर	सुतूनों के	तुम देखते हो उन्हें	और उसने डाल दिए	ज़मीन में	पहाड़	कि

تَمِيْدَ	بِكُمْ	وَبَثَّ	فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	دَآبَّةٍ ؕ	وَاَنْزَلْنَا
(ना) वो ढुलक जाए	तुम्हें लेकर	और उसने फैला दिए	उसमें	हर क़िस्म के	जानदार	और उतारा हमने

مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَاَنْۢبَتْنَا	فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	زَوْجٍ	كَرِيْمٍ ⑩
आसमान से	पानी	फिर उगाए हमने	उसमें	हर क़िस्म के	जोड़े	उम्दा

هٰذَا	خَلْقُ	اللّٰهِ	فَاَرُوْنِيْ	مَاذَا	خَلَقَ	الَّذِيْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ ؕ
ये है	तख़्लीक़	अल्लाह की	तो दिखाओ मुझे	क्या कुछ	पैदा किया	उन लोगों ने जो	उसके सिवा हैं

ع 1 11 10	بَلِ	الظّٰلِمُوْنَ	فِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ⑪ ع	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	لُقْمٰنَ
	बल्कि	ज़ालिम लोग	गुमराही में हैं	खुली-खुली	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	लुक़मान को

الْحِكْمَةَ	اَنِ	اشْكُرْ	لِلّٰهِ ؕ	وَمَنْ	يَّشْكُرْ	فَاِنَّمَا	يَشْكُرُ
हिक्मत	ये कि	शुक्र करो	अल्लाह का	और जो	शुक्र करे	तो बेशक	वो शुक्र करता है

لِنَفْسِهٖ ۚ	وَمَنْ	كَفَرَ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَنِيٌّ	حَمِيْدٌ ⑫	وَاِذْ
अपने ही नफ़्स के लिए	और जो	नाशुक्री करे	तो बेशक	अल्लाह	बहुत बेनियाज़ है	ख़ूब तारीफ़ वाला है	और जब

قَالَ	لُقْمٰنُ	لِابْنِهٖ	وَهُوَ	يَعِظُهٗ	يٰبُنَيَّ	لَا تُشْرِكْ
कहा	लुक़मान ने	अपने बेटे से	जबकि वो	वो नसीहत कर रहा था उसे	ऐ मेरे बेटे	ना तू शरीक ठहरा

وقف النبي صلى الله عليه وسلم	بِاللّٰهِ ؕ	اِنَّ	الشِّرْكَ	لَظُلْمٌ	عَظِيْمٌ ⑬	وَوَصَّيْنَا	الْاِنْسَانَ
	साथ अल्लाह के	बेशक	शिर्क	यक़ीनन ज़ुल्म है	बहुत बड़ा	और ताकीद की हमने	इंसान को

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّفِصٰلُهٗ	وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ	اُمُّهٗ	حَمَلَتْهُ	بِوَالِدَيْهِ ۚ
और दूध छुड़ाना हुआ उसका	कमज़ोरी पर कमज़ोरी (सहते हुए)	उसकी मां ने	उठाया उसको	साथ अपने वालिदैन के (एहसान की)

الْمَصِيْرُ ⑭	اِلَيَّ	وَلِوَالِدَيْكَ ؕ	لِيْ	اشْكُرْ	اَنِ	فِيْ عَامَيْنِ
लौटना है	तरफ़ मेरे ही	और अपने वालिदैन का	मेरा	शुक्र करो	कि	दो साल में

لَيْسَ	مَا	بِيْ	تُشْرِكَ	اَنْ	عَلٰٓى	جَاهَدٰكَ	وَاِنْ
नहीं	उसे जो	मेरे साथ	तुम शरीक करो	कि	इस पर	दोनों कोशिश करें तुम्हारे साथ	और अगर

فِي الدُّنْيَا	وَصَاحِبْهُمَا	تُطِعْهُمَا	فَلَا	عِلْمٌ ۙ	بِهٖ	لَكَ
दुनिया में	और साथ रहो उन दोनों के	तुम इताअत करो उन दोनों की	तो ना	कोई इल्म	जिसका	तुम्हें

اِلَيَّ	ثُمَّ	اِلَيَّ ۚ	اَنَابَ	مَنْ	سَبِيْلَ	وَّاتَّبِعْ	مَعْرُوْفًا ۫
तरफ़ मेरे ही	फिर	मेरी तरफ़	रुजूअ करे	उसके जो	रास्ते की	और पैरवी करो	भले तरीक़े से

اِنَّهَآ	يٰبُنَيَّ	تَعْمَلُوْنَ ⑮	كُنْتُمْ	بِمَا	فَاُنَبِّئُكُمْ	مَرْجِعُكُمْ
बेशक वो	ऐ मेरे बेटे	तुम अमल करते	थे तुम	वो जो	फिर मैं बताऊंगा तुम्हें	लौटना है तुम्हारा

اَوْ	فِيْ صَخْرَةٍ	فَتَكُنْ	مِّنْ خَرْدَلٍ	حَبَّةٍ	مِثْقَالَ	تَكُ	اِنْ
या	किसी चट्टान में	फिर हो वो	राई के	दाने	वज़न बराबर	हो वो (शै)	अगर

اللّٰهَ	اِنَّ	اللّٰهُ ؕ	بِهَا	يَاْتِ	فِي الْاَرْضِ	اَوْ	فِي السَّمٰوٰتِ
अल्लाह	बेशक	अल्लाह	उसे	ले आएगा	ज़मीन में	या	आसमानों में

بِالْمَعْرُوْفِ	وَاْمُرْ	الصَّلٰوةَ	اَقِمِ	يٰبُنَيَّ	خَبِيْرٌ ⑯	لَطِيْفٌ
नेकी का	और हुक्म दो	नमाज़	क़ायम करो	ऐ मेरे बेटे	ख़ूब बाख़बर है	बहुत बारीक बीन है

ذٰلِكَ	اِنَّ	اَصَابَكَ ؕ	مَآ	عَلٰى	وَاصْبِرْ	عَنِ الْمُنْكَرِ	وَانْهَ
ये है	बेशक	पहुंचे तुझे	जो	उस पर	और सब्र करो	बुराई से	और रोको

AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

تَمْشِ	وَلَا	لِلنَّاسِ	خَدَّكَ	تُصَعِّرْ	وَلَا	مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿17﴾ ج
तुम चलो	और ना	लोगों से	अपना गाल	तुम मोड़ो	और ना	हिम्मत के कामों में से

فَخُوْرٍ ﴿18﴾ ج	مُخْتَالٍ	كُلَّ	لَا يُحِبُّ	اللّٰهَ	اِنَّ	مَرَحًا ط	فِي الْاَرْضِ
फ़ख़्र जताने वाले को	खुद पसंद	हर	नहीं वो पसंद करता	अल्लाह	बेशक	अकड़ कर/इतरा कर	ज़मीन में

اَنْكَرَ	اِنَّ	مِنْ صَوْتِكَ ط	وَاغْضُضْ	فِيْ مَشْيِكَ	وَاقْصِدْ
सबसे ज़्यादा नापसंदीदा	बेशक	अपनी आवाज़ को	और पस्त रखो	अपनी चाल में	और मयानारवी इख़्तियार करो

سَخَّرَ	اللّٰهَ	اَنَّ	تَرَوْا	اَلَمْ	الْحَمِيْرِ ﴿19﴾ ع	لَصَوْتُ	الْاَصْوَاتِ
मुसख़्ख़र किया	अल्लाह ने	बेशक	तुमने देखा	क्या नहीं	गधे की	अलबत्ता आवाज़ है	आवाज़ों में से

ع 2 8 11

عَلَيْكُمْ	وَاَسْبَغَ	فِي الْاَرْضِ	وَمَا	فِي السَّمٰوٰتِ	مَّا	لَكُمْ
तुम पर	और उसने तमाम कर दीं	ज़मीन में है	और जो कुछ	आसमानों में है	जो कुछ	तुम्हारे लिए

يُّجَادِلُ	مَنْ	وَمِنَ النَّاسِ	وَّبَاطِنَةً ط	ظَاهِرَةً	نِعَمَهٗ
झगड़ता है	जो	और लोगों में से कोई है	और बातिनी	ज़ाहिरी	नेअमतें अपनी

وَاِذَا	مُّنِيْرٍ ﴿20﴾	كِتٰبٍ	وَّلَا	هُدًى	وَّلَا	عِلْمٍ	بِغَيْرِ	فِي اللّٰهِ
और जब	रोशन के	किताब	और बग़ैर	हिदायत के	और बग़ैर	इल्म के	बग़ैर	अल्लाह के बारे में

بَلْ	قَالُوْا	اللّٰهُ	اَنْزَلَ	مَآ	اتَّبِعُوْا	لَهُمُ	قِيْلَ
बल्कि	वो कहते हैं	अल्लाह ने	नाज़िल किया	उसकी जो	पैरवी करो	उन्हें	कहा जाता है

الشَّيْطٰنُ	كَانَ	اَوَلَوْ	اٰبَآءَنَا ط	عَلَيْهِ	وَجَدْنَا	مَا	نَتَّبِعُ
शैतान	हो	क्या भला अगर	अपने आबा ओ अजदाद को	उस पर	पाया हमने	उसकी जो	हम पैरवी करेंगे

اِلَى اللّٰهِ	وَجْهَهٗٓ	يُّسْلِمْ	وَمَنْ	السَّعِيْرِ ﴿21﴾	اِلٰى عَذَابِ	يَدْعُوْهُمْ
तरफ़ अल्लाह के	चेहरा अपना	सुपुर्द कर दे	और जो कोई	भड़कती हुई आग के	तरफ़ अज़ाब के	वो बुलाता उन्हें

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاِلَى اللّٰهِ	الْوُثْقٰى ؕ	بِالْعُرْوَةِ	اسْتَمْسَكَ	فَقَدِ	مُحْسِنٌ	وَهُوَ
और तरफ़ अल्लाह ही के	मज़बूत	कड़ा	उसने थाम लिया	तो यक़ीनन	मोहसिन भी हो	और वो

اِلَيْنَا	كُفْرُهٗ ؕ	يَحْزُنْكَ	فَلَا	كَفَرَ	وَمَنْ	الْاُمُوْرِ (22)	عَاقِبَةُ
तरफ़ हमारे ही	कुफ़्र उसका	ग़मगीन करे आपको	पस ना	कुफ़्र किया	और जिसने	सब कामों का	अंजाम है

عَلِيْمٌۢ	اللّٰهَ	اِنَّ	عَمِلُوْا ؕ	بِمَا	فَنُنَبِّئُهُمْ	مَرْجِعُهُمْ
ख़ूब जानने वाला है	अल्लाह	बेशक	उन्होंने अमल किए	वो जो	फिर हम बताऐंगे उन्हें	लौटना है उनका

اِلٰى عَذَابٍ	نَضْطَرُّهُمْ	ثُمَّ	قَلِيْلًا	نُمَتِّعُهُمْ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (23)
तरफ़ अज़ाब	हम मजबूर करेंगे उन्हें	फिर	थोड़ा सा	हम फ़ायदा देंगे उन्हें	सीनों वाले (भेद)

وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	مَّنْ	سَاَلْتَهُمْ	وَلَئِنْ	غَلِيْظٍ (24)
और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	किसने	पूछें आप उनसे	और अलबत्ता अगर	सख़्त के

لَا يَعْلَمُوْنَ (25)	اَكْثَرُهُمْ	بَلْ	لِلّٰهِ ؕ	الْحَمْدُ	قُلِ	اللّٰهُ ؕ	لَيَقُوْلُنَّ
वो इल्म नहीं रखते	अक्सर उनके	बल्कि	अल्लाह के लिए है	सब तारीफ़	कह दीजिए	अल्लाह ने	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे

الْغَنِيُّ	هُوَ	اللّٰهَ	اِنَّ	وَالْاَرْضِ ؕ	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	لِلّٰهِ
बहुत बेनियाज़	वो ही है	अल्लाह	बेशक	और ज़मीन में	आसमानों में है	जो कुछ	अल्लाह ही के लिए है

اَقْلَامٌ	مِنْ شَجَرَةٍ	فِي الْاَرْضِ	مَا	اَنَّ	وَلَوْ	الْحَمِيْدُ (26)
क़लमे हों	दरख़्त हैं	ज़मीन में	जो भी	बेशक	और अगर	ख़ूब तारीफ़ वाला

نَفِدَتْ	مَّا	اَبْحُرٍ	سَبْعَةُ	مِنْۢ بَعْدِهٖ	يَمُدُّهٗ	وَّالْبَحْرُ
ख़त्म होंगे	ना	और (समुन्दर)	सात	बाद इसके	बढ़ाऐं उसको	और समुन्दर (स्याही हो)

وَلَا	خَلْقُكُمْ	مَا	حَكِيْمٌ (27)	عَزِيْزٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	اللّٰهِ ؕ	كَلِمٰتُ
और ना	पैदा करना तुम्हारा	नहीं	ख़ूब हिक्मत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	अल्लाह	बेशक	अल्लाह के	कलिमात

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَصِيْرٌ (28)	سَمِيْعٌۢ	اللّٰهَ	اِنَّ	كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ	اِلَّا	بَعْثُكُمْ
ख़ूब देखने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है	अल्लाह	बेशक	एक जान की तरह	मगर	दोबारा उठना तुम्हारा

وَيُوْلِجُ	فِي النَّهَارِ	الَّيْلَ	يُوْلِجُ	اللّٰهَ	اَنَّ	تَرَ	اَلَمْ
और वो दाख़िल करता है	दिन में	रात को	वो दाख़िल करता है	अल्लाह	बेशक	आपने देखा	क्या नहीं

يَّجْرِيْٓ	كُلٌّ	وَالْقَمَرَ ز	الشَّمْسَ	وَسَخَّرَ	فِي الَّيْلِ	النَّهَارَ
चल रहा है	हर एक	और चांद को	सूरज	और उसने मुसख़्ख़र कर दिया	रात में	दिन को

ذٰلِكَ	خَبِيْرٌ (29)	تَعْمَلُوْنَ	بِمَا	اللّٰهَ	وَّاَنَّ	اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ये	ख़ूब बाख़बर है	तुम अमल करते हो	उससे जो	अल्लाह	और बेशक	एक मुक़र्रर वक़्त तक

مِنْ دُوْنِهِ	يَدْعُوْنَ	مَا	وَاَنَّ	الْحَقُّ	هُوَ	اللّٰهَ	بِاَنَّ
उसके सिवा	वो पुकारते हैं	जिसे	और बेशक	हक़	वो ही है	अल्लाह	बवजह इसके कि

تَرَ	اَلَمْ	الْكَبِيْرُ ع (30)	الْعَلِيُّ	هُوَ	اللّٰهَ	وَاَنَّ	الْبَاطِلُ لا	ع 3 11 12
आपने देखा	क्या नहीं	बहुत बड़ा	बुलंदतर	वो ही है	अल्लाह	और बेशक	बातिल है	

لِيُرِيَكُمْ	اللّٰهِ	بِنِعْمَتِ	فِي الْبَحْرِ	تَجْرِيْ	الْفُلْكَ	اَنَّ
ताकि वो दिखाए तुम्हें	अल्लाह की	साथ नेअमत के	समुन्दर में	चलती हैं	कश्तियां	बेशक

شَكُوْرٍ (31)	صَبَّارٍ	لِّكُلِّ	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ
बहुत शुक्र गुज़ार के	बहुत सब्र करने वाले	वास्ते हर	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें	यक़ीनन	अपनी निशानियों में से

لَهُ	مُخْلِصِيْنَ	اللّٰهَ	دَعَوُا	كَالظُّلَلِ	مَّوْجٌ	غَشِيَهُمْ	وَاِذَا
उसके लिए	ख़ालिस करने वाले होकर	अल्लाह को	वो पुकारते हैं	सायबानों की तरह	एक मौज	छा जाती है उन पर	और जब

مُّقْتَصِدٌ ؕ	فَمِنْهُمْ	اِلَى الْبَرِّ	نَجّٰىهُمْ	فَلَمَّا	الدِّيْنَ ۚ
सीधी राह पर क़ायम रहने वाले हैं	तो उनमें से बाज़	तरफ़ ख़ुश्की के	वो निजात देता है उन्हें	तो जब	दीन को

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	يَجْحَدُ	بِاٰيٰتِنَآ	اِلَّا	كُلُّ	خَتَّارٍ	كَفُوْرٍ (32)	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
और नहीं	इंकार करता	हमारी आयात का	मगर	हर	बहुत अहद शिकन	इंतिहाई नाशुक्रा	ऐ लोगो

اتَّقُوْا	رَبَّكُمْ	وَاخْشَوْا	يَوْمًا	لَّا يَجْزِيْ	وَالِدٌ	عَنْ وَّلَدِهٖ ز
डरो	अपने रब से	और डरो	उस दिन से	ना काम आएगा	कोई बाप	अपने बच्चे के

وَلَا	مَوْلُوْدٌ	هُوَ	جَازٍ	عَنْ وَّالِدِهٖ	شَيْـًٔا ط	اِنَّ	وَعْدَ
और ना ही	कोई बच्चा	वो	काम आने वाला है	अपने बाप की तरफ़ से	कुछ भी	यक़ीनन	वादा

اللّٰهِ	حَقٌّ	فَلَا	تَغُرَّنَّكُمُ	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا وقفة	وَلَا
अल्लाह का	सच्चा है	तो ना	हरगिज़ धोखे में डाले तुम्हें	ज़िंदगी	दुनिया की	और ना

يَغُرَّنَّكُمْ	بِاللّٰهِ	الْغَرُوْرُ (33)	اِنَّ	اللّٰهَ	عِنْدَهٗ	عِلْمُ
हरगिज़ धोखे में डाले तुम्हें	अल्लाह के बारे में	बड़ा धोखे बाज़	बेशक	अल्लाह	उसके पास	इल्म है

السَّاعَةِ ج	وَيُنَزِّلُ	الْغَيْثَ ج	وَيَعْلَمُ	مَا	فِي الْاَرْحَامِ ط	وَمَا
क़यामत का	और वो बरसाता है	बारिश को	और वो जानता है	जो कुछ	रहमों में है	और नहीं

تَدْرِيْ	نَفْسٌ	مَّاذَا	تَكْسِبُ	غَدًا ط	وَمَا	تَدْرِيْ	نَفْسٌۢ
जानता	कोई नफ़्स	क्या कुछ	वो कमाई करेगा	कल	और नहीं	जानता	कोई नफ़्स

ع 4 4 13

بِاَيِّ	اَرْضٍ	تَمُوْتُ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌ	خَبِيْرٌ (34) ع
कि किस	ज़मीन पर	वो मरेगा	बेशक	अल्लाह	बहुत इल्म वाला है	ख़ूब बाख़बर है

اٰيَاتُهَا: 30 — 32 سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ 75 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ (1) ج	تَنْزِيْلُ	الْكِتٰبِ	لَا رَيْبَ	فِيْهِ	مِنْ رَّبِّ	الْعٰلَمِيْنَ (2) ط
الٓمّٓ	नाज़िल करना है	किताब का	नहीं कोई शक	इसमें	रब की तरफ़ से है	तमाम जहानों के

AL HUDA INT RNATIONL WELFARE FOUNDATION

لِتُنْذِرَ	مِنْ رَّبِّكَ	الْحَقُّ	هُوَ	بَلْ	افْتَرٰىهُ ۚ	يَقُوْلُوْنَ	اَمْ
ताकि आप डराऐं	आपके रब की तरफ़ से	हक़ है	वो	बल्कि	उसने गढ़ लिया है उसे	वो कहते हैं	क्या

يَهْتَدُوْنَ (3)	لَعَلَّهُمْ	مِّنْ قَبْلِكَ	مِّنْ نَّذِيْرٍ	اَتٰىهُمْ	مَّآ	قَوْمًا
वो हिदायत पा जाऐं	ताकि वो	आपसे पहले	कोई डराने वाला	आया उनके पास	नहीं	उस क़ौम को

بَيْنَهُمَا	وَمَا	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	الَّذِيْ	اَللّٰهُ
दर्मियान है इन दोनों के	और जो कुछ	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	वो जिसने	अल्लाह

لَكُمْ	مَا	عَلَى الْعَرْشِ ۭ	اسْتَوٰى	ثُمَّ	فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
तुम्हारे लिए	नहीं	अर्श पर	वो बुलंद हुआ	फिर	छः दिनों में

يُدَبِّرُ	تَتَذَكَّرُوْنَ (4)	اَفَلَا	شَفِيْعٍ ۭ	وَّلَا	مِنْ وَّلِيٍّ	مِّنْ دُوْنِهٖ
वो तदबीर करता है	तुम नसीहत पकड़ते	क्या फिर नहीं	कोई सिफ़ारिशी	और ना	कोई दोस्त	उसके सिवा

فِيْ يَوْمٍ	اِلَيْهِ	يَعْرُجُ	ثُمَّ	اِلَى الْاَرْضِ	مِنَ السَّمَآءِ	الْاَمْرَ
एक दिन में	तरफ़ उसके	वो चढ़ता है	फिर	ज़मीन तक	आसमान से	हर मामले की

عٰلِمُ	ذٰلِكَ	تَعُدُّوْنَ (5)	مِّمَّا	سَنَةٍ	اَلْفَ	مِقْدَارُهٗٓ	كَانَ
जानने वाला	ये है	तुम शुमार करते हो	उसमें से जो	साल	हज़ार	हिसाब/अंदाज़ा उसका	है

كُلَّ	اَحْسَنَ	الَّذِيْٓ	الرَّحِيْمُ (6) ۙ	الْعَزِيْزُ	وَالشَّهَادَةِ	الْغَيْبِ
हर	अच्छा बनाया	वो जिसने	निहायत रहम करने वाला	बहुत ज़बरदस्त	और हाज़िर का	ग़ैब

جَعَلَ	ثُمَّ	مِنْ طِيْنٍ (7) ۚ	خَلْقَ الْاِنْسَانِ	وَبَدَاَ	خَلَقَهٗ	شَيْءٍ
उसने बनाई	फिर	मिट्टी से	इंसान की तख़लीक़ की	और उसने इब्तिदा की	उसने पैदा किया जिसे	चीज़ को

وَنَفَخَ	سَوّٰىهُ	ثُمَّ	مَّهِيْنٍ (8) ۚ	مِّنْ مَّآءٍ	مِنْ سُلٰلَةٍ	نَسْلَهٗ
और उसने फूंक दिया	उसने दुरुस्त किया उसे	फिर	हक़ीर	पानी के	ख़ुलासे से	नस्ल उसकी

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ	وَالْاَبْصَارَ	السَّمْعَ	لَكُمُ	وَجَعَلَ	مِنْ رُّوْحِهٖ	فِيْهِ
और दिल	और आंखें	कान	तुम्हारे लिए	और उसने बनाए	अपनी रूह से	उसमें

فِي الْاَرْضِ	ضَلَلْنَا	ءَاِذَا	وَقَالُوْٓا	تَشْكُرُوْنَ (9)	قَلِيْلًا مَّا
ज़मीन में	गुम हो जाऐंगे हम	क्या जब	और उन्होंने कहा	तुम शुक्र अदा करते हो	कितना कम

رَبِّهِمْ	بِلِقَآءِ	هُمْ	بَلْ	جَدِيْدٍ ؕ	لَفِيْ خَلْقٍ	ءَاِنَّا
अपने रब की	मुलाक़ात से	वो	बल्कि	नई	अलबत्ता पैदाइश में (होंगे)	क्या बेशक हम

وُكِّلَ	الَّذِيْ	الْمَوْتِ	مَّلَكُ	يَتَوَفّٰىكُمْ	قُلْ	كٰفِرُوْنَ (10)
मुक़र्रर किया गया	वो जो	मौत का	फ़रिश्ता	फ़ौत करेगा तुम्हें	कह दीजिए	इंकारी हैं

ع 1 11 14

الْمُجْرِمُوْنَ	اِذِ	تَرٰٓى	وَلَوْ	تُرْجَعُوْنَ (11) ع	اِلٰى رَبِّكُمْ	ثُمَّ	بِكُمْ
मुजरिम	जब	आप देखें	और काश	तुम लौटाए जाओगे	तरफ़ अपने रब के	फिर	तुम पर

وَسَمِعْنَا	اَبْصَرْنَا	رَبَّنَآ	عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ	رُءُوْسِهِمْ	نَاكِسُوْا
और सुन लिया हमने	देख लिया हमने	ऐ हमारे रब	अपने रब के पास (कहेंगे)	अपने सरों को	झुकाए हुए होंगे

شِئْنَا	وَلَوْ	مُوْقِنُوْنَ (12)	اِنَّا	صَالِحًا	نَعْمَلْ	فَارْجِعْنَا
चाहते हम	और अगर	यक़ीन करने वाले हैं	बेशक हम	नेक	हम अमल करेंगे	पस लौटा दे हमें

مِنِّيْ	الْقَوْلُ	حَقَّ	وَلٰكِنْ	هُدٰىهَا	نَفْسٍ	كُلَّ	لَاٰتَيْنَا
मेरी तरफ़ से	बात	सच हो गई	और लेकिन	हिदायत उसकी	नफ़्स को	हर	अलबत्ता दे देते हम

فَذُوْقُوْا	اَجْمَعِيْنَ (13)	وَالنَّاسِ	مِنَ الْجِنَّةِ	جَهَنَّمَ	لَاَمْلَئَنَّ
तो चखो	सबके सबसे	और इंसानों से	जिन्नों से	जहन्नम को	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूंगा

وَذُوْقُوْا	نَسِيْنٰكُمْ	اِنَّا	يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ	لِقَآءَ	نَسِيْتُمْ	بِمَا
और चखो	भुला दिया हमने तुम्हें	बेशक हमने	अपने इस दिन की	मुलाक़ात को	भूल गए तुम	बवजह उसके जो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُؤۡمِنُ	اِنَّمَا	تَعۡمَلُوۡنَ ⑭	كُنۡتُمۡ	بِمَا	الۡخُلۡدِ	عَذَابَ
ईमान लाते हैं	बेशक	तुम अमल करते	थे तुम	बवजह इसके जो	हमेशगी का	अज़ाब

سُجَّدًا	خَرُّوۡا	بِهَا	ذُكِّرُوۡا	اِذَا	الَّذِيۡنَ	بِاٰيٰتِنَا
सज्दा करते हुए	वो गिर पड़ते हैं	साथ उनके	वो नसीहत किए जाते हैं	जब	वो लोग	हमारी आयात पर

تَتَجَافٰى	لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ⑮ السجدة	وَهُمۡ	رَبِّهِمۡ	بِحَمۡدِ	وَّسَبَّحُوۡا
अलग रहते हैं	नहीं वो तकब्बुर करते	और वो	अपने रब की	साथ हम्द के	और वो तस्बीह करते हैं

السجدة 9

وَّمِمَّا	وَّطَمَعًا ز	خَوۡفًا	رَبَّهُمۡ	يَدۡعُوۡنَ	عَنِ الۡمَضَاجِعِ	جُنُوۡبُهُمۡ
और उसमें से जो	और उम्मीद से	ख़ौफ़	अपने रब को	वो पुकारते हैं	बिस्तरों से	पहलू उनके

اُخۡفِيَ	مَّاۤ	نَفۡسٌ	تَعۡلَمُ	فَلَا	يُنۡفِقُوۡنَ ⑯	رَزَقۡنٰهُمۡ
छुपाया गया है	जो कुछ	कोई नफ़्स	जानता	पस नहीं	वो ख़र्च करते हैं	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें

يَعۡمَلُوۡنَ ⑰	كَانُوۡا	بِمَا	جَزَآءًۢ	اَعۡيُنٍ ج	مِّنۡ قُرَّةِ	لَهُمۡ
वो अमल करते	थे वो	उसका जो	बदला है	आंखों की	ठंडक से	उनके लिए

وقف غفران

اَمَّا	لَا يَسۡتَوٗنَ ⑱ صلے	فَاسِقًا ط	كَانَ	كَمَنۡ	مُؤۡمِنًا	كَانَ	اَفَمَنۡ
रहे	नहीं वो बराबर हो सकते	जो फ़ासिक़ है	हो सकता है	उसके मानिंद	मोमिन	है	क्या भला वो जो

نُزُلًاۢ	الۡمَاۡوٰى ز	جَنّٰتُ	فَلَهُمۡ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوۡا	الَّذِيۡنَ
मेहमानी होगी	रहने के	बाग़ात हैं	तो उनके लिए	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	वो लोग जो

النَّارُ ط	فَمَاۡوٰٮهُمُ	فَسَقُوۡا	الَّذِيۡنَ	وَاَمَّا	يَعۡمَلُوۡنَ ⑲	كَانُوۡا	بِمَا
आग है	पस ठिकाना उनका	नाफ़रमानी की	जिन्होंने	और रहे वो	वो अमल करते	थे वो	बवजह उसके जो

وَقِيۡلَ	فِيۡهَا	اُعِيۡدُوۡا	مِنۡهَاۤ	يَّخۡرُجُوۡا	اَنۡ	اَرَادُوۡۤا	كُلَّمَاۤ
और कह दिया जाएगा	उसी में	वो लौटा दिए जाएँगे	उससे	वो निकल आएँ	कि	वो इरादा करेंगे	जब कभी

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	ذُوْقُوْا	عَذَابَ	النَّارِ	الَّذِيْ	كُنْتُمْ	بِهٖ	تُكَذِّبُوْنَ ⑳
उन्हें	चखो	अज़ाब	आग का	वो जो	थे तुम	जिसे	तुम झुठलाते

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ	مِّنَ الْعَذَابِ	الْاَدْنٰى	دُوْنَ	الْعَذَابِ	الْاَكْبَرِ
और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएंगे उन्हें	अज़ाब में से	कमतर/हल्का	इलावा	अज़ाब	बड़े के

لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ㉑	وَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنْ	ذُكِّرَ	بِاٰيٰتِ
शायद कि वो	वो लौट आएं	और कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	नसीहत किया गया	साथ आयात के

ع 2 11 15

رَبِّهٖ	ثُمَّ	اَعْرَضَ	عَنْهَا ؕ	اِنَّا	مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ	مُنْتَقِمُوْنَ ㉒ ع
अपने रब की	फिर	उसने मुंह मोड़ लिया	उनसे	बेशक हम	मुजरिमों से	इंतिक़ाम लेने वाले हैं

وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسَى	الْكِتٰبَ	فَلَا	تَكُنْ	فِيْ مِرْيَةٍ
और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को	किताब	पस ना	आप हों	शक में

مِّنْ لِّقَآئِهٖ	وَجَعَلْنٰهُ	هُدًى	لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ㉓ ج	وَجَعَلْنَا
उसकी मुलाक़ात से	और बनाया हमने उसे	हिदायत	बनी इस्राईल के लिए	और बनाए हमने

مِنْهُمْ	اَئِمَّةً	يَّهْدُوْنَ	بِاَمْرِنَا	لَمَّا	صَبَرُوْا ۗ	وَكَانُوْا
उनमें से	इमाम	जो रहनुमाई करते थे	हमारे हुक्म से	जब	उन्होंने सब्र किया	और थे वो

بِاٰيٰتِنَا	يُوْقِنُوْنَ ㉔	اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	يَفْصِلُ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَ
हमारी आयात पर	वो यक़ीन रखते	बेशक	रब आपका	वो ही	वो फ़ैसला करेगा	दर्मियान उनके	दिन

الْقِيٰمَةِ	فِيْمَا	كَانُوْا	فِيْهِ	يَخْتَلِفُوْنَ ㉕	اَوَلَمْ	يَهْدِ	لَهُمْ
क़यामत के	उसमें जो	थे वो	जिसमें	वो इख़्तिलाफ़ करते	क्या भला नहीं	रहनुमाई की	उनकी कि

كَمْ	اَهْلَكْنَا	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِّنَ الْقُرُوْنِ	يَمْشُوْنَ	فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ
कितनी ही	हलाक कीं हमने	इनसे पहले	उम्मतें	वो चलते-फिरते हैं	उनके घरों में

AL HIDAYAH INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ ؕ	اَفَلَا	يَسْمَعُوْنَ ﴿26﴾	اَوَ لَمْ	يَرَوْا	اَنَّا
बेशक	इसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	क्या भला नहीं	वो सुनते	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक हम

نَسُوْقُ	الْمَآءَ	اِلَى الْاَرْضِ	الْجُرُزِ	فَنُخْرِجُ	بِهٖ	زَرْعًا
चलाते हैं हम	पानी को	तरफ़ ज़मीन	बंजर के	फिर हम निकालते हैं	साथ उसके	खेती को

تَاْكُلُ	مِنْهُ	اَنْعَامُهُمْ	وَ اَنْفُسُهُمْ ؕ	اَفَلَا	يُبْصِرُوْنَ ﴿27﴾	وَ يَقُوْلُوْنَ
खाते हैं	उससे	उनके मवेशी	और वो ख़ुद भी	क्या भला नहीं	वो देखते	और वो कहते हैं

الثلاثة

مَتٰى	هٰذَا	الْفَتْحُ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿28﴾	قُلْ	يَوْمَ	الْفَتْحِ
कब होगा	ये	फ़ैसला	अगर	हो तुम	सच्चे	कह दीजिए	दिन	फ़ैसले के

لَا يَنْفَعُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِيْمَانُهُمْ	وَلَا	هُمْ	يُنْظَرُوْنَ ﴿29﴾
ना नफ़ा देगा	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	ईमान लाना उनका	और ना	वो	वो मोहलत दिए जाएंगे

فَاَعْرِضْ	عَنْهُمْ	وَانْتَظِرْ	اِنَّهُمْ	مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿30﴾ ع
पस ऐराज़ कीजिए	उनसे	और इंतिज़ार कीजिए	बेशक वो (भी)	इंतिज़ार करने वाले हैं

ع 3 8 16

اٰيَاتُهَا: 73 — 33 سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ 90 — رُكُوْعَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰاَيُّهَا	النَّبِيُّ	اتَّقِ	اللّٰهَ	وَلَا	تُطِعِ	الْكٰفِرِيْنَ	وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ
ऐ	नबी	डरिए	अल्लाह से	और ना	आप इताअत कीजिए	काफ़िरों	और मुनाफ़िक़ों की

اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا ﴿1﴾	وَّاتَّبِعْ	مَا	يُوْحٰٓى
बेशक	अल्लाह	है	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिक्मत वाला	और पैरवी कीजिए	उसकी जो	वही की जाती है

اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرًا ﴿2﴾
तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	बेशक	अल्लाह	है	उसकी जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब ख़बर रखने वाला

وَّتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ	وَكِيْلًا ③	مَا	جَعَلَ	اللّٰهُ
और तवक्कल कीजिए	अल्लाह पर	और काफ़ी है	अल्लाह	कारसाज़	नहीं	बनाए	अल्लाह ने

لِرَجُلٍ	مِّنْ قَلْبَيْنِ	فِيْ جَوْفِهٖ ۚ	وَمَا	جَعَلَ	اَزْوَاجَكُمُ	الّٰٓـئِْ
किसी शख़्स के लिए	दो दिल	उसके सीने में	और नहीं	उसने बनाया	तुम्हारी बीवियों को	वो जो

تُظٰهِرُوْنَ	مِنْهُنَّ	اُمَّهٰتِكُمْ ۚ	وَمَا	جَعَلَ	اَدْعِيَآءَكُمْ	اَبْنَآءَكُمْ ؕ
तुम ज़िहार करते हो	जिनसे	मांएँ तुम्हारी	और नहीं	उसने बनाया	तुम्हारे मुंह बोले बेटों को	बेटे तुम्हारे

ذٰلِكُمْ	قَوْلُكُمْ	بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	يَقُوْلُ	الْحَقَّ	وَهُوَ	يَهْدِي
ये	बात है तुम्हारी	तुम्हारे मुंहों से	और अल्लाह	फ़रमाता है	हक़	और वो ही	वो रहनुमाई करता है

السَّبِيْلَ ④	اُدْعُوْهُمْ	لِاٰبَآئِهِمْ	هُوَ	اَقْسَطُ	عِنْدَ	اللّٰهِ ۚ
रास्ते की	पुकारो उन्हें	उनके बापों के (नाम) से	वो	ज़्यादा इंसाफ़ वाला है	नज़दीक	अल्लाह के

فَاِنْ	لَّمْ	تَعْلَمُوْٓا	اٰبَآءَهُمْ	فَاِخْوَانُكُمْ	فِي الدِّيْنِ	وَمَوَالِيْكُمْ ؕ
फिर अगर	नहीं	तुम जानते	उनके बापों को	तो भाई हैं तुम्हारे	दीन में	और दोस्त हैं तुम्हारे

وَلَيْسَ	عَلَيْكُمْ	جُنَاحٌ	فِيْمَآ	اَخْطَاْتُمْ	بِهٖ ۙ	وَلٰكِنْ	مَّا
और नहीं	तुम पर	कोई गुनाह	उस मामले में जो	ख़ता की तुमने	उसमें	लेकिन	जो

تَعَمَّدَتْ	قُلُوْبُكُمْ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ⑤	اَلنَّبِيُّ
इरादा करें	दिल तुम्हारे	और है	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	नबी

اَوْلٰى	بِالْمُؤْمِنِيْنَ	مِنْ اَنْفُسِهِمْ	وَاَزْوَاجُهٗٓ	اُمَّهٰتُهُمْ ؕ
क़रीबतर है	मोमिनों के	उनके नफ़्सों से	और बीवियां उसकी	मांएँ हैं उनकी

وَاُولُوا الْاَرْحَامِ	بَعْضُهُمْ	اَوْلٰى	بِبَعْضٍ	فِيْ كِتٰبِ	اللّٰهِ
और रहम वाले (रिशतेदार)	बाज़ उनके	नज़दीकतर हैं	बाज़ के	किताब में	अल्लाह की

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	وَالْمُهٰجِرِيْنَ	اِلَّآ	اَنْ	تَفْعَلُوْٓا	اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ
मोमिनों में से	और मुहाजिरीन में से	मगर	ये कि	तुम करो	तरफ़ अपने दोस्तों के

مَّعْرُوْفًا ؕ	كَانَ	ذٰلِكَ	فِى الْكِتٰبِ	مَسْطُوْرًا ⑥	وَاِذْ	اَخَذْنَا
कोई भलाई	है	ये	किताब में	लिखा हुआ	और जब	लिया हमने

مِنَ النَّبِيّٖنَ	مِيْثَاقَهُمْ	وَمِنْكَ	وَمِنْ نُّوْحٍ	وَّاِبْرٰهِيْمَ	وَمُوْسٰى
नबियों से	पुख़्ता अहद उनका	और आपसे	और नूह	और इब्राहीम	और मूसा

وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪	وَاَخَذْنَا	مِنْهُمْ	مِّيْثَاقًا	غَلِيْظًا ۙ⑦	لِّيَسْـَٔلَ
और ईसा इबने मरियम से	और लिया हमने	उनसे	अहद	पुख़्ता/पक्का	ताकि वो सवाल करे

الصّٰدِقِيْنَ	عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ	وَاَعَدَّ	لِلْكٰفِرِيْنَ	عَذَابًا	اَلِيْمًا ⑧ ع
सच्चों से	उनके सच के बारे में	और उसने तैयार कर रखा है	काफ़िरों के लिए	अज़ाब	दर्दनाक

ع 1 8 17

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اذْكُرُوْا	نِعْمَةَ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	اِذْ	جَآءَتْكُمْ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	याद करो	नेअमत	अल्लाह की	अपने ऊपर	जब	आए तुम्हारे पास

جُنُوْدٌ	فَاَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ	رِيْحًا	وَّجُنُوْدًا	لَّمْ	تَرَوْهَا ؕ
कई लश्कर	तो भेजी हमने	उन पर	एक आंधी	और कुछ लश्कर	नहीं	तुमने देखा उन्हें

وَكَانَ	اللّٰهُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرًا ۚ⑨	اِذْ	جَآءُوْكُمْ
और है	अल्लाह	उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला	जब	वो आए तुम पर

مِّنْ فَوْقِكُمْ	وَمِنْ اَسْفَلَ	مِنْكُمْ	وَاِذْ	زَاغَتِ	الْاَبْصَارُ	وَبَلَغَتِ
तुम्हारे ऊपर से	और नीचे से	तुम्हारे	और जब	फिर गईं	निगाहें	और पहुंच गए

الْقُلُوْبُ	الْحَنَاجِرَ	وَتَظُنُّوْنَ	بِاللّٰهِ	الظُّنُوْنَا ⑩	هُنَالِكَ	ابْتُلِيَ
दिल	गलों तक	और तुम गुमान कर रहे थे	अल्लाह के बारे में	बहुत से गुमान	उस वक़्त	आज़माए गए

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُنٰفِقُوْنَ	يَقُوْلُ	وَاِذْ	شَدِيْدًا ⑪	زِلْزَالًا	وَزُلْزِلُوْا	الْمُؤْمِنُوْنَ
मुनाफ़िक़	कह रहे थे	और जब	शिद्दत का	हिला मारा जाना	और वो हिला मारे गए	सब मोमिन

وَرَسُوْلُهٗۤ	اللّٰهُ	وَعَدَنَا	مَّا	مَّرَضٌ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ	وَالَّذِيْنَ
और उसके रसूल ने	अल्लाह ने	वादा किया हमसे	नहीं	मर्ज़ है	जिनके दिलों में	और वो लोग

يَثْرِبَ	يٰۤاَهْلَ	مِّنْهُمْ	طَّآئِفَةٌ	قَالَتْ	وَاِذْ	غُرُوْرًا ⑫	اِلَّا
यसरब	ऐ अहले	उनमें से	एक गिरोह ने	कहा	और जब	धोखे का	मगर

النَّبِيَّ	مِّنْهُمُ	فَرِيْقٌ	وَيَسْتَاْذِنُ	فَارْجِعُوْا ج	لَكُمْ	لَا مُقَامَ
नबी से	उनमें से	एक गिरोह	और इजाज़त मांग रहा था	पस लौट चलो	तुम्हारे लिए	नहीं कोई जगह ठहरने की

ع 10

اِنْ	بِعَوْرَةٍ ۛ	هِيَ	وَمَا	عَوْرَةٌ ط	بُيُوْتَنَا	اِنَّ	يَقُوْلُوْنَ
नहीं	ग़ैर महफ़ूज़	वो	हालांकि नहीं थे	ग़ैर महफ़ूज़ हैं	हमारे घर तो	बेशक	वो कह रहे थे

مِّنْ اَقْطَارِهَا	عَلَيْهِمْ	دُخِلَتْ	وَلَوْ	فِرَارًا ⑬	اِلَّا	يُّرِيْدُوْنَ
उनके अतराफ़ से	उन पर (लश्कर)	दाख़िल किए जाते	और अगर	फ़रार होना	मगर	वो चाहते थे

اِلَّا	بِهَاۤ	تَلَبَّثُوْا	وَمَا	لَاٰتَوْهَا	الْفِتْنَةَ	سُئِلُوا	ثُمَّ
मगर	उसका	वो इंतिज़ार करते	और ना	अलबत्ता वो आते उसे	फ़ितना बरपा करने का	वो सवाल किए जाते	फिर

لَا يُوَلُّوْنَ	مِنْ قَبْلُ	اللّٰهَ	عَاهَدُوا	كَانُوْا	وَلَقَدْ	يَسِيْرًا ⑭
कि नहीं वो फेरेंगे	इससे पहले	अल्लाह से	वो अहद कर चुके	थे वो	और अलबत्ता तहक़ीक़	बहुत थोड़ा

يَّنْفَعَكُمُ	لَّنْ	قُلْ	مَسْئُوْلًا ⑮	اللّٰهِ	عَهْدُ	وَكَانَ	الْاَدْبَارَ ط
फ़ायदा देगा तुम्हें	हरगिज़ नहीं	कह दीजिए	पूछा जाने वाला	अल्लाह का	अहद	और है	पुश्तें

لَّا تُمَتَّعُوْنَ	وَاِذًا	الْقَتْلِ	اَوِ	مِّنَ الْمَوْتِ	فَرَرْتُمْ	اِنْ	الْفِرَارُ
ना तुम फ़ायदा दिए जाओगे	और तब	क़त्ल से	या	मौत से	भागे तुम	अगर	भागना

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

إِلَّا	قَلِيلًا (16)	قُلْ	مَنْ	ذَا الَّذِي	يَعْصِمُكُمْ	مِنَ اللَّهِ	إِنْ
मगर	बहुत थोड़े	कह दीजिए	कौन है	वो जो	बचाएगा तुम्हें	अल्लाह से	अगर

أَرَادَ	بِكُمْ	سُوٓءًا	أَوْ	أَرَادَ	بِكُمْ	رَحْمَةً ط	وَلَا
उसने इरादा किया	तुम्हारे साथ	बुराई का	या	उसने इरादा किया	तुम्हारे साथ	रहमत का	और नहीं

يَجِدُونَ	لَهُمْ	مِنْ دُونِ	اللَّهِ	وَلِيًّا	وَلَا	نَصِيرًا (17)	قَدْ
वो पाऐंगे	अपने लिए	सिवाए	अल्लाह के	कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	तहक़ीक़

يَعْلَمُ	اللَّهُ	الْمُعَوِّقِينَ	مِنْكُمْ	وَالْقَائِلِينَ	لِإِخْوَانِهِمْ	هَلُمَّ
जानता है	अल्लाह	रोकने वालों को	तुम में से	और कहने वालों को	अपने भाईयों से	आओ

إِلَيْنَا ج	وَلَا	يَأْتُونَ	الْبَأْسَ	إِلَّا	قَلِيلًا (18) لا	أَشِحَّةً	عَلَيْكُمْ صلے ج
तरफ़ हमारे	और नहीं	वो आते	लड़ाई को	मगर	बहुत थोड़े	बख़ील हैं	तुम पर

فَإِذَا	جَاءَ	الْخَوْفُ	رَأَيْتَهُمْ	يَنْظُرُونَ	إِلَيْكَ	تَدُورُ	أَعْيُنُهُمْ
फिर जब	आता है	ख़ौफ़	देखते हैं आप उन्हें	वो देखते हैं	तरफ़ आपके	घूमती हैं	आंखें उनकी

كَالَّذِي	يُغْشَى	عَلَيْهِ	مِنَ الْمَوْتِ ج	فَإِذَا	ذَهَبَ	الْخَوْفُ
उस शख़्स की तरह	ग़शी तारी की जा रही हो	जिस पर	मौत की	फिर जब	चला जाता है	ख़ौफ़

سَلَقُوكُمْ	بِأَلْسِنَةٍ	حِدَادٍ	أَشِحَّةً	عَلَى الْخَيْرِ ط	أُولَٰئِكَ	لَمْ
बदज़बानी करते हैं आपसे	साथ ज़बानों के	तेज़	हिर्स/बुख़्ल करते हुए	माल पर	यही लोग हैं	नहीं

يُؤْمِنُوا	فَأَحْبَطَ	اللَّهُ	أَعْمَالَهُمْ ط	وَكَانَ	ذَٰلِكَ	عَلَى اللَّهِ	يَسِيرًا (19)
वो ईमान लाए	तो ज़ाया कर दिया	अल्लाह ने	उनके आमाल को	और है	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान

يَحْسَبُونَ	الْأَحْزَابَ	لَمْ	يَذْهَبُوا ج	وَإِنْ	يَأْتِ	الْأَحْزَابُ
वो समझते है	गिरोहों/लश्करों को	कि नहीं	वो गए	और अगर	आ जाऐं	गिरोह/लश्कर

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوَدُّوْا	لَوْ	اَنَّهُمْ	بَادُوْنَ	فِي الْاَعْرَابِ	يَسْاَلُوْنَ
वो चाहेंगे	काश	ये कि वो	बाहर रहने वाले होते	बद्दुओं/एराबियों में	वो पूछ लिया करते

2 ع 12 18

عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ	وَلَوْ	كَانُوْا	فِيْكُمْ	مَّا	قٰتَلُوْٓا	اِلَّا	قَلِيْلًا (20) ع
ख़बरें तुम्हारी	और अगर	वो होते	तुम में	ना	वो जंग करते	मगर	बहुत कम

لَقَدْ	كَانَ	لَكُمْ	فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ	اُسْوَةٌ	حَسَنَةٌ	لِّمَنْ
अलबत्ता तहक़ीक़	है	तुम्हारे लिए	अल्लाह के रसूल में	नमूना	अच्छा	उसके लिए जो

كَانَ	يَرْجُوا	اللّٰهَ	وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ	وَذَكَرَ	اللّٰهَ	كَثِيْرًا ؕ (21)
हो	उम्मीद रखता	अल्लाह की	और आख़िरी दिन की	और वो याद करे	अल्लाह को	कसरत से

وَلَمَّا	رَاَ	الْمُؤْمِنُوْنَ	الْاَحْزَابَ ۙ	قَالُوْا	هٰذَا	مَا	وَعَدَنَا
और जब	देखा	मोमिनों ने	गिरोहों को	वो कहने लगे	ये है	वो ही जो	वादा किया हमसे

اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ	وَصَدَقَ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ ؗ	وَمَا	زَادَهُمْ
अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	और सच फ़रमाया	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	और नहीं	उसने ज़्यादा किया उन्हें

اِلَّآ	اِيْمَانًا	وَّتَسْلِيْمًا ؕ (22)	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	رِجَالٌ	صَدَقُوْا
मगर	ईमान	और सुपुर्दगी में	मोमिनों में से	कुछ मर्द हैं	जिन्होंने सच कर दिया

مَا	عَاهَدُوا	اللّٰهَ	عَلَيْهِ ۚ	فَمِنْهُمْ	مَّنْ	قَضٰى	نَحْبَهٗ
जो	उन्होंने अहद किया था	अल्लाह से	जिस पर	तो कोई उनमें से वो है	जो	पूरी कर चुका	नज़र अपनी

وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّنْتَظِرُ ۖ	وَمَا	بَدَّلُوْا	تَبْدِيْلًا ۙ (23)	لِّيَجْزِيَ	اللّٰهُ
और उनमें से कोई है	जो	मुंतज़िर है	और नहीं	उन्होंने तब्दीली की	तब्दीली करना	ताकि बदला दे	अल्लाह

الصّٰدِقِيْنَ	بِصِدْقِهِمْ	وَيُعَذِّبَ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اِنْ	شَآءَ	اَوْ
सच्चों को	उनकी सच्चाई का	और वो अज़ाब दे	मुनाफ़िक़ों को	अगर	वो चाहे	या

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَتُوْبَ	عَلَيْهِمْ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (24) ج	وَ رَدَّ
वो मेहरबान हो जाए	उन पर	बेशक	अल्लाह	है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और फेर दिया

اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِغَيْظِهِمْ	لَمْ	يَنَالُوْا	خَيْرًا ط	وَ كَفَى
अल्लाह ने	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ उनके गुस्से के	नहीं	उन्होंने पाई	कोई भलाई	और काफ़ी हो गया

اللّٰهُ	الْمُؤْمِنِيْنَ	الْقِتَالَ ط	وَ كَانَ	اللّٰهُ	قَوِيًّا	عَزِيْزًا (25) ج
अल्लाह	मोमिनों को	जंग में	और है	अल्लाह	बहुत क़ुव्वत वाला	बहुत ज़बरदस्त

وَ اَنْزَلَ	الَّذِيْنَ	ظَاهَرُوْهُمْ	مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	مِنْ صَيَاصِيْهِمْ
और उसने उतारा	उनको जिन्होंने	मदद की उनकी	अहले किताब में से	उनके क़िलों से

وَ قَذَفَ	فِيْ قُلُوْبِهِمُ	الرُّعْبَ	فَرِيْقًا	تَقْتُلُوْنَ	وَ تَاْسِرُوْنَ
और उसने डाल दिया	उनके दिलों में	रौब	एक गिरोह को	तुम क़त्ल कर रहे थे	और तुम क़ैद कर रहे थे

فَرِيْقًا (26) ج	وَ اَوْرَثَكُمْ	اَرْضَهُمْ	وَ دِيَارَهُمْ	وَ اَمْوَالَهُمْ	وَ اَرْضًا
एक गिरोह को	और उसने वारिस बना दिया तुम्हें	उनकी ज़मीन का	और उनके घरों का	और उनके मालों का	और उस ज़मीन का

ع 3 7 19

لَّمْ	تَطَـُٔوْهَا ط	وَ كَانَ	اللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرًا (27) ع
नहीं	तुमने पामाल किया जिसे	और है	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ	قُلْ	لِّاَزْوَاجِكَ	اِنْ	كُنْتُنَّ	تُرِدْنَ	الْحَيٰوةَ
ऐ नबी	कह दीजिए	अपनी बीवियों से	अगर	हो तुम	तुम चाहती	ज़िंदगी

الدُّنْيَا	وَ زِيْنَتَهَا	فَتَعَالَيْنَ	اُمَتِّعْكُنَّ	وَ اُسَرِّحْكُنَّ	سَرَاحًا
दुनिया की	और ज़ीनत उसकी	तो आओ	मैं कुछ सामान दे दूं तुम्हें	और मैं रुख़्सत कर दूं तुम्हें	रुख़्सत करना

جَمِيْلًا (28)	وَ اِنْ	كُنْتُنَّ	تُرِدْنَ	اللّٰهَ	وَ رَسُوْلَهٗ	وَ الدَّارَ
अच्छे तरीक़े से	और अगर	हो तुम	तुम चाहती	अल्लाह को	और उसके रसूल को	और घर को

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاٰخِرَةَ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	اَعَدَّ	لِلْمُحْسِنٰتِ	مِنْكُنَّ	اَجْرًا	عَظِيْمًا ﴿29﴾
आख़िरत के	तो बेशक	अल्लाह ने	तैयार कर रखा है	नेकी करने वालियों के लिए	तुम में से	अजर	बहुत बड़ा

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ	مَنْ	يَّاْتِ	مِنْكُنَّ	بِفَاحِشَةٍ	مُّبَيِّنَةٍ	يُّضٰعَفْ
ऐ नबी की बीवियो	जो कोई	आएगी	तुम में से	बेहयाई को	खुली	बढ़ा दिया जाएगा

لَهَا	الْعَذَابُ	ضِعْفَيْنِ ؕ	وَ كَانَ	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	يَسِيْرًا ﴿30﴾
उसके लिए	अज़ाब	दोगुना	और है	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान

AL HUDA INT RNATIONL WELF RE FOUNDATION